साल 8 बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-8 | अंक-3 अक्टूबर 2025 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

विवाह विशेषांक

DPS AJMER
Sr. Sec. School
Tabiji Farm Road, Ajmer
ESTABLISHING
The Right Environment
We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.
SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman
Archery & International
Level Shooting Range
Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"
Our Activities
Skating Rink
Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level
Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.
Art & Craft
Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer
Web: www.dpsajmer.in
E-Mail: info@dpsajmer.in

सम्पादकीय

अब फिर से दौर आ रहा है शादियों का, जिसकी शुरुआत देवउठनी एकादशी से होने जा रही है। हर कोई शादी में जाने की प्रतिक्षा में है। जाने की तैयारी ठीक से करें कहीं कोई चीज भूल नहीं जायें। जिनके घर में ही शादी है उनके लिए छोटी से छोटी बात का ध्यान रखना आवश्यक है, इसमें कहीं चूक नहीं हो जाये इसलिए पहले से आमंत्रित लोगों तथा कार्यों की लिस्ट तैयार करना ही उचित है। जो दुल्हा या दुल्हन बनने जा रहे हैं उनके मन में जहां उमंग है वहीं अपने पार्टनर के लिए संशय रहता है, यह स्वाभाविक है, इसे सहजत से लेने की जरूरत है। शादी की रस्में पारिवारिक रीति-रिवाजों एवं संस्कृति अनुसार हो इसमें युवा कम दखल दे यही उचित है। इसके लिए गीत-संगीत का पृथक आयोजन और बारात का अवसर आता ही है।

हमारे यहां विवाह देवताओं का आह्वान करके उनकी साक्षी में किया जाता है, यह एक पवित्र बंधन है साथ ही दो आत्माओं का मिलन है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पूरा करने का साधन है। यह हिन्दु समाज में गृहस्थ जीवन में प्रवेश का द्वार तथा नवदम्पत्ति द्वारा नये कर्तव्य एवं दायित्वों की सहर्ष स्वीकृति है। इससे दो परिवारों का भी मिलन होता है वहीं वधु को नये वातावरण में सामंजस्य एवं बेहतर तालमेल बैठाने का अवसर मिलता है। उसे बेटी से ससुराल में बहु बनकर पृथक एवं सुखद माहौल मिलता है वहीं एक सच्चे एवं विश्वसनीय मित्र के रूप में लाईफ पार्टनर का साथ मिलता है। अब अवसर आता है रिश्तों को सम्भालने का, उसे ससुराल पक्ष और वधु धीरे-धीरे सम्भाल लेते हैं। धीरे-धीरे इन नये दम्पत्ति को यह रिश्ता बड़ा ही आत्मिय लगने लगता है तथा बहुत अपने ससुराल से छुट्टियों या चंद अवसरों पर पीहर जाना पसंद करती है।

आजकल विवाह में प्रीवेडिंग शूट, डेस्टिनेशन वेडिंग तथा इवेंट कम्पनियों ने प्रभाव जमाना प्रारम्भ कर दिया है। ये सब हमारी संस्कृति का भाग नहीं है साथ ही ये अत्यधिक खर्चीले भी हैं। अनेक समाजों ने इसे समझा और इन्हें नहीं अपनाने का संकल्प लेना प्रारम्भ कर दिया है। शादी में अधिक पकवानों के सम्बन्ध में हाल ही में खण्डेलवाल समाज ने 16पकवान तक ही बनाने का निर्णय लिया है। प्रीवेडिंग शूट को तो अनेक समाज सांस्कृतिक प्रदूषण मानते हैं और इससे बचने का आह्वान कर रहे हैं। खैर यह अपना व्यक्तिगत निर्णय है, उम्मीद है आप यह निर्णय पारिवारिक परम्पराओं एवं संस्कृति को ध्यान में रखकर लेंगे।

शादी में जो आनन्द रस्मों के निर्वहन, मांगलिक गीत एवं परम्परागत भोजन में है वो तड़क-भड़क एवं दिखावे में नहीं है। सहजता एवं सरलता से हमारी अपनी परम्परानुसार विवाह कर सुख से रहना जीवन ही सफल वैवाहिक जीवन का सार है।

– रमेश कुमावत (गैदर)

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
		मोहन लाल कुमावत	मो. 9887557425
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322, **सह-सम्पादक :** रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल 9408093778 तथा मनीष कुमावत 9660702083, रवि कुमावत 9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402** **सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया 9680931428

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

हमारी वेबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
12 शिल्पकारों की कला की अद्वितीय प्रदर्शनी जेकेके में	4
राशि कुमावत, पलक कुमावत, संगीता कुमावत, कुलदीप कुमावत, रविन्द्र कुमावत, शिवराज कुमावत एवं पवन टांक का RAS परीक्षा में चयन	5
कुमावत क्षत्रिय विकास समिति बरकत नगर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण	5
नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर का सफल आयोजन	7
कुमावत समाज छात्रावास भवन निर्माण के लिए विधायक कोष से 20 लाख रूपये हुए स्वीकृत	7
उदयपुर कुमावत वरिष्ठ नागरिकों का वन भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न	7
हजारों श्रद्धालुओं ने किया श्री हनुमान चालीसा 108 सामूहिक महापाठ	8
भामाशाह कुमावत परिवार ने कराया स्कूल में कक्ष का निर्माण, लोकार्पण	8
दुर्घटना में दो भाईयों की मृत्यु व सदमे में बुजुर्ग पिता का निधन	9
कुचामन पुलिस पर नाबालिक लड़की के अपहरणकर्ताओं को बचाने के गम्भीर आरोप	9
भामाशाह कुमावत ने ट्रैक्टर व ट्रॉली गोशाला में की भेंट	9
कुमावत समाज युवाओं को निशुल्क कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करवाएगा	10
साने ताकाइची जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री	10
शब्द ही ब्रह्म, नकारात्मक शब्द बोलने से बचे	10
किस्मत मेहनत की दासी है	10
विवाह — दो आत्माओं का पवित्र मिलन, जीवन का सबसे सुंदर अध्याय	11
भोजन को बनाए प्रसाद	11
हेडगेवार से भागवत तक 6 सरसंघचालकों की साधना	12
ढूंढ़िए वजह मुस्कुराने की-10	13
जीवन के रंग	13
रातों-रात गायब हुए 'कुलधरा' गांव के निवासी	14
मांगलिक योग/दोष और विवाह सम्बन्ध	14
मोहन कुमार बालोदिया और रश्मि बालोदिया ने सजाई गीतों की सुरीली शाम	15
मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने एवं खाने के चमत्कारी लाभ ई-बुक का विमोचन	15
नीलम कुमावत को श्रेष्ठ गृहणि सम्मान	15
रोमन कुमावत योग प्रशिक्षक सम्मानित	15
योग शिक्षक विष्णु अनावडिया सम्मानित	15
जीएसटी छूट, सजै बाजार, बम्बर खरीद ने बढ़ाया दीपोत्सव पर उत्साह	16
ओम प्रकाश कुमावत का असिस्टेंट प्रोफेसर में चयन	17
कुमावत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह, 130 प्रतिभाएं पुरस्कृत	17
"बिहारी शरण पारीक राजस्थानी काव्य सम्मान" कवि चंचल को	18
वैवाहिक जीवन की पहली सीढ़ी — एडजस्टमेंट की कला	19
तोड़े कुरूतियों को	19
विवाह का बदलता स्वरूप	21
हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955	21
हिन्दु विवाह में बदलते प्रतिमान	22
शरणागत की रक्षा करना निन्दित नहीं माना जाता	23
भगवान् श्रीरामचन्द्र - सर्वमान्य आदर्श	23
काम का दबाव और भागदौड़ भरा जीवन है बनाम अंतरात्मा की शांति	23
विशिष्ठ संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें	26

12 शिल्पकारों की कला की अद्वितीय प्रदर्शनी जेकेके में

जयपुर, 26 सितंबर। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक अद्वितीय प्रदर्शन है - शिल्पकार आर्ट और क्राफ्ट प्रदर्शनी 2025 जिसमें 12 शिल्पकार अपने अद्भुत शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया। ये शिल्पकार, जिन्होंने विभिन्न पारंपरिक कलाओं में महारत हासिल की है, भारतीय शिल्प कला में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय पहचान और पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इस प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन एमएलए, गोपाल शर्मा द्वारा पारंपरिक दीप प्रज्वलन कर किया गया। इसके अलावा प्रदर्शनी में प्रेजिडेंट, राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के.एल.जैन, डीसी हैंडीक्राफ्ट्स सीतापुरा जयपुर, वरिष्ठ सहायक निदेशक, रजत वर्मा और सुधीर माथुर थे।

प्रदर्शनी में सबसे खास आकर्षण का केंद्र रहा शिल्पकार पृथ्वीराज कुमावत एवं पवन कुमार कुमावत की अद्भुत कलाकृतियां।

पृथ्वीराज कुमावत : प्रसिद्ध राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित है, के द्वारा बनाया गया पन्ना रत्न जड़ित उत्कृष्ट प्राकृतिक कृति। जिसके दोनों ओर गणेश जी की जटिल आकृतियाँ बडी ही खूबसूरती से उकेरी गई हैं। इस नक्काशी को नाजुक फूलों और पत्तियों से सजाया गया है, जो कारीगर के असाधारण कौशल को दर्शाता है। मूर्ति का वज़न 2367 कैरेट, ऊँचाई 8 सेमी, चौड़ाई 9 सेमी तथा गहराई 6 सेमी है।

पवन कुमार कुमावत : राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता पवन कुमार कुमावत द्वारा आठ महीनों की कठिन साधना से "गणेश दरबार" बनाया, जो आयोजन का केंद्र बिंदु रहा। प्राकृतिक रूबी (वजन: 491 ग्राम; आकार: 5.5" ऊँचाई व 3.5" चौड़ाई) पर एक ही पत्थर से उकेरी गई अद्वितीय मूर्ति थी। रूबी जैसे अत्यंत कठोर रत्न हो तथा कठोरता का अंक 9 है, इस पर हाथ से की गई नक्काशी में भगवान गणेश राजसी दरबार में विराजमान हैं। चार भुजाओं में अंकुश (आध्यात्मिक नियंत्रण), पाश (नकारात्मकता को वश में करने का प्रतीक), कमल (पवित्रता का प्रतीक) और मोदक (अनुशासन के मधुर फल का प्रतीक) धारण किए हुए गणेश जी अभय मुद्रा में आशीर्वाद दे रहे हैं। चारों ओर दिव्य दरबार, वृक्षों, अप्सराओं और

शेष पृष्ठ 10 पर...

राशि कुमावत की RAS परीक्षा में 6वीं रैंक

हाल ही में जारी RAS-2023 के परिणामों में कुमावत समाज की राशि कुमावत ने सेल्फ स्टडी तथा अपनी मेहनत के बलबूते पर 6वीं रैंक हासिल कर कुमावत समाज को गौरवान्वित किया है।

राशि कुमावत के पिता श्री अनन्त कुमार वर्तमान में OSD CM हैं तथा इनके पति डॉ. महेश कुमार कुमावत RJS हैं। राशि प्रारम्भ से ही पढ़ाई में होशियार रही है। इनके 10वीं बोर्ड में 95 प्रतिशत एवं सीनियर सैंकण्डरी में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इन्होंने एमएनआईटी जयपुर से बी.टेक. (EC) में किया है तथा सभी ब्रांचों में सर्वोच्च रहकर माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से गोल्ड मैडल प्राप्त किया था। ये अमेरिका में 1 करोड़ से अधिक के पैकेज में पदस्थापित थीं। किन्तु विवाह के समय इन्होंने इस नौकरी को त्याग दिया। वर्तमान में ये सूचना सहायक के पद पर राजस्थान सरकार में कार्यरत हैं। इन्होंने RAS परीक्षा में छठा स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का पुन: परिचय दिया है। 'कुमावत इण्डिया' पत्रिका की ओर से राशि कुमावत को हार्दिक बधाई।

पलक कुमावत का RAS परीक्षा में चयन

चौमूं के डॉ. मदनलाल कुमावत की पुत्रवधु पलक कुमावत (पुत्री श्री विमल कुमावत, पूर्व उपमहापौर, जयपुर) ने अपने कठिन परिश्रम, समर्पण और दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर RAS-2023 परीक्षा उत्तीर्ण की है। पलक के पति डॉ. महेन्द्र कुमावत जो जैसलमेर में मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत थे का वर्ष 2016 में सड़क दुर्घटना में निधन हो गया था। इस घटना से लगे सदमे के बाद भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपने जीवन का लक्ष्य RAS परीक्षा में पास होना बना लिया। ये अभी चिकित्सा विभाग में कार्यरत हैं। इनकी सफलता ने परिवार को गर्व से भर दिया है। अगर किसी के मन में लगन और आत्मविश्वास हो तो कोई भी परिस्थिति का सामना कर सफलता हासिल की जा सकती है। पलक कुमावत इसका जीता जागता उदाहरण है। उनका कहना है कि निरन्तर प्रयास और आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है। 'कुमावत इण्डिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

संगीता कुमावत का RAS परीक्षा में चयन

जयपुर जिले के छोटे से गांव लूणवा की बेटी संगीता कुमावत ने अपनी मेहनत और संकल्प से वह कर दिखाया, जो लाखों युवाओं का सपना होता है। राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) 2023 की परीक्षा में 103वीं रैंक प्राप्त कर संगीता न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे इलाके की शान बन गई हैं। वर्तमान में जयपुर के गोविंदपुरा में निवास कर रही संगीता की इस उपलब्धि पर समाज व क्षेत्र में हर्ष की लहर है। संगीता कुमावत ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लूणवा गांव से प्राप्त की और आगे चलकर B.Ed की डिग्री हासिल की। शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए भी उन्होंने अपने लक्ष्य को कभी आंखों से ओझल नहीं होने दिया। एक समय उन्हें ग्राम विकास अधिकारी (VDO) पद के लिए चयन मिला, लेकिन उन्होंने यह पद ग्रहण नहीं किया क्योंकि उनके मन में एक बड़ा सपना पल रहा था। संगीता का कहना था कि मैं वहीं रुकना नहीं चाहती थी, मेरा लक्ष्य RAS था। संगीता एक साधारण परिवार से आती हैं। उनके पिता बनवारी लाल कुमावत कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में कार्यरत हैं और मां श्रीमती चम्पादेवी एक गृहिणी हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद संगीता ने कभी हार नहीं मानी। पढ़ाई के प्रति समर्पण और निरंतर अभ्यास ने उन्हें आज यह मुकाम दिलाया।

कुलदीप कुमावत एवं रविन्द्र कुमावत का RAS परीक्षा में चयन

घाटवा गांव के दो घनिष्ठ मित्रों ने सच्ची दोस्ती और मेहनत का ऐसा उदाहरण पेश किया है, जो पूरे प्रदेश के युवाओं, के लिए प्रेरणा बन गया है। बचपन से एक साथ खेलने, पढ़ने और सपने देखने वाले कुलदीप कुमावत और रविन्द्र कुमावत ने अब एक साथ राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) परीक्षा में सफलता हासिल कर गांव का नाम पूरे प्रदेश में रोशन किया है। आरएएस फाइनल परिणाम में कुलदीप कुमावत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य में 11वीं रैंक, जबकि रविन्द्र कुमावत ने

541वीं रैंक प्राप्त की है। दोनों ही दोस्त वर्तमान में कनिष्ठ लेखाकार के पद पर कार्यरत है। नौकरी के साथ निरंतर तैयारी करते हुए दोनों ने लगन और अनुशासन से यह मुकाम हासिल किया। दोनों युवाओं ने सफलता का श्रेय कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास, परिवार, गुरुजनों के मार्गदर्शन और एक-दूसरे की प्रेरणा को दिया है। दोनों युवाओं ने अपने बड़े व शिक्षक सुनील कुमावत के मार्गदर्शन को विशेष श्रेय दिया है। कुलदीप ने कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है, निरंतर प्रयास ही मंजिल तक पहुंचाता है। वहीं रविन्द्र का कहना है कि दोस्ती और साथ की भावना ने हमें हर कठिन समय में आगे बढने की ताकत दी। दृढ़ संकल्प के साथ कोई भी काम को करने की ठान ली जाए तो कोई भी काम मुमकिन नहीं है।

RAS परीक्षा में अन्य समाज बंधु भी चयनित

RAS परीक्षा 2023 में शिवराज कुमावत 92वीं रैंक, पवन टांक कुमावत भी उत्तीर्ण हुए हैं। इन सभी को भी **'कुमावत इण्डिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

गुंदोज चौकी प्रभारी एवं गुड़ा एंदला थाना के एएसआई श्री चंपालाल जी कुमावत के सड़क दुर्घटना में हुए असमय निधन की खबर अत्यंत दु:खद है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिवार को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

कुमावत क्षत्रिय विकास समिति बरकत नगर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण

जयपुर। कुमावत क्षत्रीय विकास समिति बरकत नगर टोंक फाटक क्षेत्र जयपुर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने रविवार को बाबा रामदेव मंदिर विनोबा बस्ती में शपथ ली, जिसमें मुख्य अतिथि श्री पन्नालाल ठेकेदार रहे। अध्यक्षता एडवोकेट सत्यनारायण कुमावत ने की, विशिष्ट अतिथि मुकेश वर्मा तथा अतिथि पार्षद राजेश बालोदिया, राजेश धुंधारिया, कपिला मारवाल व बाबूलाल ब्याडवाल रहे।

इन्होंने ली शपथ

अध्यक्ष छोटू राम बडीवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ईश्वरलाल लोठिया, उपाध्यक्ष (महिला) नीतू गेदर, मंत्री लालचंद राहोरिया, कोषाध्यक्ष सतीश जलान्धरा, उप मंत्री सत्यनारायण बावला, संगठन मंत्री ओम प्रकाश गेदर, प्रचार मंत्री रूडमल राजोरिया, सांस्कृतिक मंत्री तोषिका तोंदवाल सहित 7 कार्यकारिणी सदस्यों ने शपथ ली। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई।

श्री कुमावत क्षत्रिय महिला विकास संस्था, जयपुर द्वारा आयोजित रास घूमर कार्यक्रम 6 अक्टूबर 2025 को सम्पन्न हुआ। संस्था की अध्यक्षा श्रीमती शोभा गहलोत व उनकी टीम ने यह कार्यक्रम आयोजित किया था। समाज की अनेक महिलाओं ने रास घूमर में भाग लेकर कार्यक्रम को सपुल बनाया। 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर का सफल आयोजन

जयपुर, सांगानेर — प्रभा लाइफ केयर संस्थान (एनजीओ) एवं निम्स हार्ट एंड ब्रेन हॉस्पिटल, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 5 अक्टूबर 2025 को ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, सांगानेर, जयपुर में नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में 200 से अधिक लोगों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया तथा स्वास्तिक ब्लड बैंक के सहयोग से 20 से अधिक यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

शिविर में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा नि:शुल्क परामर्श और जांचें प्रदान की गईं : HbA1c, ईसीजी और रैंडम ब्लड शुगर जैसी विभिन्न जाँचें भी नि:शुल्क की गईं। उपस्थित मरीजों को आवश्यकतानुसार प्रारंभिक दवाएँ भी प्रदान की गईं।

शिविर का संचालन डॉ. गोविंद कुमावत के नेतृत्व में किया गया, विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम में शामिल रहे डॉ. अनिल चौधरी (हृदय रोग विशेषज्ञ), डॉ. रवि जाखड़ (स्नायु रोग विशेषज्ञ), डॉ. निपुण शर्मा (एम.डी. फैमिली मेडिसिन), डॉ. रामसहाय प्रजापत (एम.डी. मेडिसिन), डॉ. सुनील सोरण (एम.एस. ट्रॉमा सर्जरी), डॉ. विनय (जनरल सर्जन), डॉ. मनीष बेरवाल, डॉ. आशीष यादव, डॉ. चेतन (एम.बी.बी.एस.), डॉ. तनिश्का एवं डॉ. मुस्कान (स्त्री रोग विशेषज्ञ)।

कार्यक्रम की सफलता में स्कूल प्रशासन, स्वयंसेवकों, स्वास्तिक ब्लड बैंक टीम और चिकित्सक दल का विशेष योगदान रहा।

संस्थान की संस्थापक श्रीमती प्रभाती देवी ने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना प्रभा लाइफ केयर का प्रमुख लक्ष्य है। आयोजकों ने भविष्य में भी इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर नियमित रूप से आयोजित करने का संकल्प लिया।

कुमावत समाज छात्रावास भवन निर्माण के लिए विधायक कोष से 20 लाख रूपये हुए स्वीकृत

रूपनगढ़। रूपनगढ़ में कुमावत छात्रावास एवं विकास समिति के भवन विस्तार कार्य के लिए जल संसाधन मंत्री एवं पुष्कर विधायक श्री सुरेश सिंह रावत की अनुशंसा पर विधायक क्षेत्रीय विकास योजना से रु.20 लाख की राशि स्वीकृत की गई है।

यह राशि भवन विस्तार कार्य के लिए PWD द्वारा उपयोग की जाएगी। छात्रावास और भवन का निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ किया होगा जिससे समाज के विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकेंगी।

बिरदीचंद कुमावत सहित कुमावत समाज के प्रतिनिधियों ने मंत्री श्री रावत के इस सहयोग के लिए आभार जताया। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से छात्रावास की सुविधाओं में विस्तार होगा और समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को पढ़ाई में और भी बेहतर माहौल मिलेगा।

कुमावत समाज ने आशा व्यक्त की कि भवन विस्तार के बाद यहां शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों को भी और मजबूती मिलेगी।

उदयपुर कुमावत वरिष्ठ नागरिकों का वन भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न

12 अक्टूबर। कुमावत वरिष्ठ नागरिकों को मात्र 600 रु में वन भ्रमण का कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा। 3 बसों में ये लोग गोगुंदा के पास रामकुण्ड व वन भ्रमण को गये थे। सभी उत्साह एवं उमंग से लबरेज थे। समाज के वरिष्ठ नागरिकों में से हर महिला एवं पुरूष ने अपने बचपन की यादें ताजा की। मनोरंजन एवं बचपन के खेल खेलकर, झरने एवं प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेते हुए अधिकांश बहनों ने तो नहाने एवं जल क्रिडाओं का खूब आनन्द लिया। चाय एवं नाश्ता तथा खाने में सूप एवं मन पसन्द व्यंजनों का भी वरिष्ठ नागरिकों ने खूब लुत्फ उठाया। छोटी मोटी परेशानी तो आती जाती रहती हैं, उसका भी सभी ने धैर्यपूर्वक सामना किया जो नगण्य से था। वन भ्रमण में लगभग 200 लोगों ने ाााग लिया जिसमें कुल आमद रुपए 120300 तथा व्यय 105920 हुए तथा 14380 आय आधिक्य रहा जिसे संस्था में जमा करवा दिया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हरिशंकर जी खंडारिया, शंकर जी भदानिया, श्रीमती दिनेश लारना का कई दिनों का जो परिश्रम था जो सफल रहा। यह कार्यक्रम सभी भाइयों व बहनों के सहयोग के बिना सम्भव नहीं हो पाता। हरिओम ओमजी भाई साहब के मार्गदर्शन में जो स्थान चयन किया वास्तव में प्रकृति का आनन्द लेने की द्रष्टि से अच्छा रहा।

हजारों श्रद्धालुओं ने किया श्री हनुमान चालीसा 108 सामूहिक महापाठ

जयपुर। अजमेर रोड स्थित द हेरिटेज रिसॉर्ट्स में 4 अक्टूबर को भक्ति, आस्था और उल्लास का केंद्र बन गया, जब हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में श्री हनुमान चालीसा 108 सामूहिक महापाठ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। आयोजन का नेतृत्व हनुमान चालीसा प्रबंध समिति द्वारा किया गया और इस दौरान भक्तों को **अमरनाथ महाराज** का दिव्य सानिध्य प्राप्त हुआ। पूरे वातावरण में भक्ति की गूंज और उल्लास का अनूठा संगम देखने को मिला।

गौ पूजन और कन्या पूजन से हुआ शुभारंभ : आयोजन की शुरुआत परंपरागत भारतीय विधियों के अनुसार गौ पूजन और कन्या पूजन से हुई। समिति के सदस्यों ने बताया कि भारतीय संस्कृति में गाय और कन्या को माँ का स्थान दिया गया है और किसी भी धार्मिक आयोजन की सफलता इनके आशीर्वाद से ही सुनिश्चित होती है।

श्री भंदे के बालाजी महाराज का भव्य दरबार और जयकारे : आयोजन स्थल पर विशेष रूप से श्री भंदे के बालाजी महाराज का भव्य दरबार सजाया गया। पूरे कार्यक्रम के दौरान जय श्री राम के साथ-साथ श्री भंदे के बालाजी महाराज की जय के जयकारे गूंजते रहे। श्रद्धालुओं को विशेष रूप से श्री भंदे के बालाजी महाराज का सिन्दूर लगाया गया और उन्हें अभिमंत्रित रक्षा सूत्र बांधा गया।

सजावट और आध्यात्मिक प्रतीक : पूरा पंडाल भगवा पताकाओं, जय श्री राम और हनुमान जी के ध्वजों से सजाया गया। हर कोने में के झण्डे लहरा रहे थे। महिलाओं और बच्चियों ने भी बड़ी संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की।

सामूहिक महापाठ से गूंजा वातावरण : दोपहर 2:30 बजे से श्री हनुमान चालीसा 108 सामूहिक महापाठ का शुभारंभ हुआ। सभी साधक अपने-अपने पूजा आसनों पर विराजमान हुए। हर साधक को काउंटिंग मशीन और अर्थ सहित हनुमान चालीसा की पुस्तक दी गई, ताकि वे सटीक गिनती और भावपूर्ण मनन के साथ पाठ कर सकें। इस दौरान भक्तों को देने के लिए 108 विशेष यंत्र जागृत किए गए। इन यंत्रों को पूजन और मंत्रोच्चार के बाद भक्तों में वितरित किया गया। जैसे-जैसे पाठ आगे बढ़ा, पूरा परिसर भक्ति की ध्वनि से गूंजता गया। हजारों कंठों से उठे जय श्री राम, जय बजरंग बली और श्री भंदे बालाजी महाराज की जय के जयकारों ने वातावरण को कंपा दिया।

महा आरती और प्रसाद वितरण : महापाठ पूर्ण होने के बाद शाम 5:30 बजे भव्य महाआरती सम्पन्न हुई। शंखनाद और दीपों की लौ से वातावरण और भी पावन हो उठा। इसके बाद शाम 6:00 बजे से सभी भक्तों के लिए भोजन प्रसादी का वितरण किया गया।

भक्ति और उल्लास का दिव्य संगम : पूरे आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में एकजुटता, भक्ति और सद्भावना का संदेश देना था। हनुमान चालीसा प्रबंध समिति और अमरनाथ महाराज ने बताया कि इस प्रकार का सामूहिक आयोजन न केवल आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा भी फैलाता है।

भामाशाह कुमावत परिवार ने कराया स्कूल में कक्ष का निर्माण, लोकार्पण

चित्तौड़गढ़। मातृभूमि के प्रति प्रेम, व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं से बढ़कर होता है। निस्वार्थ भाव से देश और समाज कल्याण के लिए किए गए कार्य की ही सार्थकता होती है। बधाई के पात्र है वे भामाशाह जो बिना किसी अपेक्षा के विद्यालयों में कक्षा-कक्षों का निर्माण करा समाज उत्थान के लिए कार्य करते हैं। **ये बात विधायक चंद्रभानसिंह आक्या ने राउमावि मानपुरा में गांव के बालूराम कुमावत, चतरुलाल कुमावत व श्यामलाल कुमावत द्वारा विद्यालय में कक्षा-कक्ष मय बरामदे का निर्माण कराने पर लोकार्पण व भामाशाह सम्मान समारोह कही।**

विधायक आक्या ने विद्यालय में डीएमएफटी मद से प्रार्थना स्थल पर डोम व दो अतिरिक्त कक्षा-कक्ष निर्माण कराने की घोषणा की। संस्था प्रधान चंद्रकांता राठौर ने बताया कि विशिष्ट अतिथि पूर्व मण्डल अध्यक्ष भंवर सिंह खरड़ी बावड़ी, पूर्व मण्डल महामंत्री रामेश्वर धाकड, पंस प्रतिनिधि घीसूलाल भांबी, पूर्व शक्ति केंद्र संयोजक दिनेश राव व पूर्व सरपंच सत्यनारायण वैष्णव थे। बालिकाओं ने स्वागत गीत गाया। विद्यालय में फर्नीचर के लिए 51-51 हजार देने पर शिक्षिका सुषमा पुरोहित व रितु राणावत का भी अभिनन्दन किया। **विधायक आक्या की अनुशंषा पर बिरला सीमेंट वर्क्स ने एक लाख एपए के फर्नीचर भेंट किया। संचालन निर्मला शर्मा व प्रदीप शर्मा ने किया।** हेमशंकर दशोरा, श्याम गिरी, राम गिरी, नानालाल कुमावत, नाथूसिंह, लखन कुमावत सहित ग्रामवासी उपस्थित थे।

दुर्घटना में दो भाईयों की मृत्यु व सदमे में बुजुर्ग पिता का निधन

समाज ने की परिवार को आर्थिक मदद

बीते दिनों ग्राम पंचायत हस्तेडा के शिवनगर में खाटूवाल परिवार हुई दुख:द सडक दुर्घटना में दो सगे भाईयों की मृत्यु हुई और उनके सदमे बुजुर्ग पिता का निधन हो गया था। इस दु:खद घटना ने सम्पूर्ण समाज और क्षेत्र को गहरे शोक मे पहुंचा दिया। एक ही परिवार के तीन सदस्यों का इस प्रकार से छोडकर चले जाना अपूरणीय क्षति थी। इस घटना की दुख:द सूचना पर समाजबन्धुओं ने जिस प्रकार से दु:ख बांटने में परिवारजनों की मदद करने काम किया वह बहुत गौरवपूर्ण रहा है। साथ ही मन में इस विश्वास को जागृत करने का काम किया है कि हमारे समाज में विपत्ति के समय सामाजिक सहयोग की भावना परिवारों को सम्बलता प्रदान कर सकती है।

इस दुख:द घडी में समाजबंधुओं द्वारा दिया गया एकता, सहयोग का परिचय सराहनीय रहा है। विशेष रूप से धन्यवाद हमारे समाज के सरकारी कर्मचारी का जिन्होंने अपनी स्वप्रेरणा से अपने ग्रुप के सदस्यों द्वारा परिवार के सदस्यों की त्वरित सहायता हेतु आर्थिक सहयोग की पहल की और परिवार के आश्रितों के लिए 2 लाख 30 हजार रूपये का सहयोग राशि एकत्रित की। श्री क्षत्रिय कुमावत समाज विकास समिति चौमूं-आमेर एवं श्री क्षत्रिय कुमावत समाज सेवा समिति चौमूं के पदाधिकारियों का जिन्होंने दु:ख की इस घड़ी में परिवारजनों को 51-51 हजार रूपये की आर्थिक मदद की। इस सहयोग से परिवार को त्वरित राहत व हिम्मत मिली। सभी सहयोगकर्ताओं को इस पहल के लिए बहुत-बहुत आभार।

-रिशपाल कुमावत, आष्टीकलाँ

कुचामन पुलिस पर नाबालिक लड़की के अपहरणकर्ताओं को बचाने के गम्भीर आरोप

27 अगस्त, 2025 को कुचामन से कुमावत समाज की एक नाबालिक लड़की प्रसाद लेने घर से निकली थी। आरोप है कि इस दौरान कमल चौधरी निवासी कुचामन एक सफेद कार में आया और बालिका को जबरन गाड़ी में डाल अपहरण कर ले गया। इस घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) 1:00 बजे दोपहर तक थाने में दर्ज हो चुकी थी, शाम तक आरोपी कुचामन क्षेत्र में था तथा उसका मोबाइल चालू था। समाज के लोगों ने पुलिस को दबीश देने का आग्रह किया पर पुलिस ने ठोस कार्यवाही नहीं की और रात 11 बजे आरोपी को भाग निकलने का मौका मिल गया। समाज के लोगों ने रैली व धरना प्रदर्शन किया एस.डी.एम. को ज्ञापन दिया तथा राज्य मंत्री विजय सिंह चौरी को भी मामले से अवगत कराया पर डेढ़ माह तक कोई कार्यवाही नहीं हुई।

जब अन्य मामले की जांच के लिए एडीसी क्राइम दिनेश एम.एन. कुचामन आए तो समाज ने उन्हें पुलिस की निष्क्रियता एवं लापरवाही से अवगत कराया तथा ज्ञापन सौंपा।

अब जाकर जयपुर से यह नाबालिक लड़की बरामद कर ली गई है लेकिन अपहरणकर्ता अभी भी फरार है। आरोप है कि पुलिस उन्हें बचा रहीं है। पुलिस नाबालिक पर अनुचित दबाव बना रही है, डराकर उसके बयान लिए गये हैं, परिवारजनों को मिलने नहीं दिया जा रहा और उनसे दुर्व्यवहार किया जा रहा है। यह बरामदगी समाज के एकजुट होकर संघर्ष की परिणिति है अन्यथा जिस ढुलमुल तरीके से पुलिस कार्यवाही कर रही थी, सफलता मिलना मुश्किल था। पर समाज अपराधियों की गिरफ्तारी तक रूकना नहीं चाहिए जिससे भविष्य में कोई भी अपराधी कुमावत समाज से कोई भी वारदात नहीं करने की सोचेगा।

भामाशाह कुमावत ने ट्रैक्टर व ट्रॉली गोशाला में की भेंट

लांबिया। संत देवाराम महाराज गौशाला समिति कांवलिया खुर्द को भामाशाह पोकरराम कुमावत व उनके पुत्र बाबूलाल, श्यामलाल, भरत पटेल मेरोता (कुमावत) एवं परिवार द्वारा 8 लाख रुपए की लागत से नया ट्रैक्टर ट्रॉली डाले सहित भेंट की। गौशाला समिति सदस्य राकेश कुमावत ने बताया कि यह गौशाला में पशुओं के चारे-भोजन व अन्य कार्यों के लिए उपयोग में लाई जाएगी। इस दौरान गौशाला समिति अध्यक्ष भीकाराम मेरोता, सचिव उप प्रधान पप्पूराम, कोषाध्यक्ष सफी मोहम्मद, भगवत सिंह, नरपत सिंह चरण, गोपाराम बावरी, लालाराम, मोहनलाल मेघवाल, रजब अली, अकबर खान, शिवकरण, पोकरराम कुमावत, पुजारी प्रकाश गिरी, पंडित धर्मेंद्र शर्मा, प्रशासक भंवरुराम, उपसरपंच गोपीराम भींयाराम जाट, मनोहरदान, पूर्व सरपंच लालाराम, पिरुदीन तेली आदि मौजूद थे।

कुमावत समाज युवाओं को निशुल्क कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करवाएगा

जयपुर। सिरसी रोड स्थित एक गार्डन में रविवार को कुमावत युवा संवाद 2025 का 12 अक्टूबर को आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य आयोजक मुकेश कुमावत ने बताया कि

युवाओं को सही दिशा, सही सोच और सामूहिक प्रयास की भावना के साथ जोड़ने के लिए यह आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देव कुमावत ने घोषणा करते हुए कहा कि जल्द ही कुमावत समाज के बच्चों को निशुल्क **नीट, जेईई, यूपीएससी और आरपीएससी की भर्ती परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग दी जाएगी।** मुख्य वक्ताओं में प्रदेश कांग्रेस संगठन महासचिव ललित तूनवाल, फुलेरा के पूर्व विधायक निर्मल कुमावत, दांतारामगढ़ से गजानंद कुमावत, ब्लॉक अध्यक्ष बद्रीनारायण कुमावत, भाजपा ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत, सोहनलाल कुमावत, लोकेश कोथून, राजेंद्र निवाणा, एनएसयूआई प्रदेश महासचिव हेमचंद कुमावत और एनएसयूआई सचिव अजय मारवाल सहित कई लोग मौजूद रहे।

साने ताकाइची जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री

जापान में साने ताकाइची पहली महिला प्रधानमंत्री बनने जा रही हैं।राजनीतिक संकट के बीच, उन्होंने एक नए साथी के साथ गठबंधन किया है, जो सत्तारूढ़ गठबंधन को राइट विंग की ओर ले जाएगा। शिगेरु इशिबा की जगह लेने वाली ताकाइची का गठबंधन संसद में बहुमत से कम है। वह आर्थिक सुरक्षा और लैंगिक समानता जैसे पदों पर कार्य कर चुकी हैं।

शब्द ही ब्रह्म, नकारात्मक शब्द बोलने से बचे

शब्दाद्वैतवाद के अनुसार हमारे मुख से उच्चारित शब्द ही ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का रूप है। अत: हमें मज़ाक़ में भी अपनों के बारे में नकारात्मक शब्द उच्चारित नहीं करना चाहिये। किसी की भी दुराशीष नहीं लेनी चाहिये। अन्तरात्मा से निकली आशीष/दु:राशीष निश्चित रूप से फलीभूत होती है।

हमारे ऋषि-मुनि शब्दों को ब्रह्म का रूप मानकर ही उच्चारण करते थे। एक बार जो वचन उच्चारित कर देते जीवन भर उसे निभाते थे। जिसके उदाहरण प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में भरे पड़े हैं। चाहे दशरथ के वचन हो, कृष्ण के वचन हो या दुर्वासा जैसे ऋषि के श्राप हो।

विज्ञान ने भी अब सिद्ध कर दिया है कि हमारे हमारे विचारों एवं उच्चारित शब्दों का हमारे शरीर में स्थित 50 खरब कोशिकाओं एवं प्रत्येक कोशिका में स्थित तीन अरब जीन्स पर प्रभाव पड़ता है।

अत: हमें हमारे दैनिक जीवन में हमेशा बड़ों का विशेषतौर से माता-पिता का आशीर्वाद लेने हेतु अच्छे कृत्य करते रहना चाहिये तथा अपने द्वारा उच्चारित शब्दों का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

-एस आर सिंघाटिया

किस्मत मेहनत की दासी है

गुरुजी को अचानक पुराना स्टूडेंट मिल गया। गुरुजी ने पूछा ''क्यों बेटा, तीस साल का हो गया। नौकरी नहीं लगी। अभी तक बाप की कमाई पर पल रहा है? स्टूडेंट बोला'' किस्मत खराब है गुरुजी !! रोज दस घण्टे पढ़ता हूँ फिर भी नहीं लग पाया।'' गुरुजी बोले ''दो लड़को को पत्थर ढोने का काम दिया जाता है। दोनों को बराबर पत्थर ढोने थे एक लड़का एक बार में 10 किलो पत्थर उठा कर चलता है और दूसरा लड़का 15 किलो पत्थर उठा कर चलता है। बताओ पहले कौनसा लड़का अपने पत्थर ढोयेगा?'' स्टूडेंट बोला ''जो लड़का 15 किलो एक बार मे उठा कर ले जा रहा है वही पहले ढोयेगा।'' गुरुजी मुस्करा कर बोले, किस्मत-विस्मत् कुछ नहीं होती। सब कुछ मेहनत होती है। तू 10 घण्टे रोज पढ़ता है मगर जो 15 घंटे रोज पढ़ते है वो कहाँ जायेंगे? नौकरी तो उनको मिल गई। तू ने अपनी पूरी ताकत लगाई ही नहीं। अगर मेहनत कर रहे हो तो अपनी 100 प्रतिशत ताकत लगाओ। किस्मत का रोना लेकर मत बैठो। किस्मत मेहनत की दासी है।

12 शिल्पकारों की कला की अद्वितीय प्रदर्शनी जेकेके में

पृष्ठ 4 से आगे....

प्राचीन मंदिर वास्तुकला से प्रेरित बारीक नक्काशी इस मूर्ति को जीवंत बना देती है। पूरी मूर्ति एक ही रूबी क्रिस्टल से तराशी गई है—जहाँ ज़रा-सी गलती भी कीमती रत्न को क्षतिग्रस्त कर सकती थी। इसलिए यह शिल्प कौशल, धैर्य साधना, एकाग्रता और आध्यात्मिकता का अद्वितीय संगम है।

ये शिल्पकार, जो अपने-अपने शिल्प में निपुण हैं, अपनी परंपराओं को संरक्षित और विकसित कर रहे हैं, जिससे भारतीय कला को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल रही है। उनकी अद्वितीय कारीगरी और समर्पण भारत की शिल्पकला की अनंत सुंदरता और विविधता को जीवंत बनाए रखने का अनुपम उदाहरण है। इसे मैंने व शिल्पकला पारखी श्री सी एम कुमावत ने स्वयं देखा है।

-रमेश गेदर, सम्पादक

विवाह — दो आत्माओं का पवित्र मिलन, जीवन का सबसे सुंदर अध्याय

विवाह : यह केवल एक संस्कार नहीं, बल्कि जीवन की सबसे कोमल अनुभूति है। यह वह क्षण है जब दो अलग-अलग जीवन, दो परिवार, और दो संस्कृतियाँ एक सूत्र में बंध जाती हैं। विवाह वह वचन है, जो सिर्फ सात फेरों में नहीं, बल्कि जीवनभर की हर धड़कन में गूंजता है।

हर लड़की के सपनों में सजा होता है एक कोमल अहसास — जिसमें वह अपने जीवनसाथी के साथ एक ऐसी दुनिया बसाती है जहाँ अपनापन हो, समझ हो, और बिना कहे भी सब कुछ समझ लेने वाली एक गहरी आत्मीयता हो। वही सपना जब विवाह के रूप में साकार होता है, तो लगता है जैसे ज़िंदगी में नया सूरज उगा हो।

विवाह का असली अर्थ : विवाह सिर्फ दो लोगों का साथ नहीं, बल्कि दो आत्माओं का संगम है। यह वह रिश्ता है जिसमें न कोई स्वार्थ होता है, न कोई शर्त। इसमें बस विश्वास, सम्मान और प्रेम की नींव होती है।

समझना, सहना, और एक-दूसरे की भावनाओं को महसूस करना ही विवाह की असली सुंदरता है।

क्योंकि प्रेम तब तक अधूरा है जब तक उसमें साथ निभाने की शक्ति न हो।

विवाह हमें सिखाता है कि ''साथ रहना आसान है, लेकिन साथ निभाना कला है।''

यह कला वही सीख सकता है जो प्रेम को सिर्फ भावना नहीं, जिम्मेदारी समझता हो।

रस्मों से रिश्तों तक : भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र यज्ञ माना गया है।

हर रस्म, हर मंत्र अपने भीतर एक गहरा अर्थ समेटे होता है। मेहंदी में सजे हाथ, हल्दी की खुशबू, फेरे के दौरान लिए गए वचन। ये सब केवल रीति-रिवाज नहीं, बल्कि जीवन के व्रत हैं।

इन सात फेरों के साथ दो आत्माएँ यह प्रण लेती हैं कि अब से हर खुशी और हर ग़म साझा होगा, हर मुस्कान और हर आँसू एक-दूसरे के साथ होंगे।

विदाई के उस क्षण में जब एक बेटी अपने मायके से ससुराल जाती है, तो वह केवल घर नहीं बदलती, बल्कि अपना पूरा संसार बदल देती है। उसकी आँखों में आँसू भी होते हैं और सपने भी — पुराने रिश्तों की छाया में नए संबंधों की रोशनी। यही विवाह की सबसे भावुक और सुंदर सच्चाई है।

आधुनिक समय में विवाह : समय के साथ विवाह का स्वरूप भी बदला है।

अब विवाह सिर्फ 'बंधन' नहीं, बल्कि 'साझेदारी' बन गया है —

जहाँ बराबरी का हक़, परस्पर सम्मान और एक-दूसरे के सपनों का समर्थन मुख्य आधार है।

अब पति-पत्नी सिर्फ जीवनसाथी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त होते हैं —

जो साथ हँसते हैं, साथ गिरते हैं, और फिर साथ उठ खड़े होते हैं।

विवाह का संदेश : विवाह हमें यह सिखाता है कि प्यार पाने से ज़्यादा ज़रूरी है — प्यार को निभाना।

यह एक ऐसी यात्रा है जिसमें हर दिन नया रंग होता है —

कभी मुस्कान का, कभी तकरार का, कभी समझौते का, और कभी बिना कहे माफ़ कर देने का।

पर अंत में यही यात्रा सबसे खूबसूरत होती है,

क्योंकि यह हमें सिखाती है —

सच्चा प्रेम सिर्फ दो दिलों का नहीं, दो जीवनों का मिलन होता है।

अंत में —

विवाह केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवनभर की साधना है।

यह हमें परिपक्व बनाता है, जिम्मेदार बनाता है, और प्रेम की गहराई सिखाता है।

और यही कारण है कि कहा जाता है -

''विवाह वह बंधन है जहाँ दो आत्माएँ मिलकर ईश्वर के अधूरे संगीत को पूर्ण करती हैं।''

-सीमा कुमावत (मारवाल)

भोजन को बनाए प्रसाद

भोजन में विभिन्न प्रकार के पाये जाने वाले विटामिन्स, मिनरल्स आदि तत्त्वों की जानकारी एवं ज्ञान तो हमारा काफ़ी बढ़ गया है परन्तु भोजन को प्रसाद बनाकर खाने की प्राचीन विधा हम भूल रहे हैं । अशुद्ध वातावरण एवं शुद्ध विचार रहित बनाये गये होटल में खाना लेना हम अपनी शान समझने लग गये है तथा प्रसाद मंदिरों में ढूँढते फिरते है। इसीलिए भोजन पर इतना खर्चा करने के बावजूद न तो पाचन एवं स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा न ही तृप्ति सहित शांति मिलती है । गृहिणी के अमृत विचारों के साथ घर पर बनाया गया भोजन यदि पहले घर पर आये साधु संतों / मेहमानों को तथा घर के बुजुर्गों को खिलाकर बाद में हम भोजन करें तो भोजन प्रसाद बन जाता है और घर मंदिर ।

हेडगेवार से भागवत तक 6 सरसंघचालकों की साधना

भारतीय समाज के चरित्र निर्माण और संगठन से ही राजनैतिक दासता की मुक्ति संभव है, यह विचार 5 साथियों के मन में अंकुरित हुआ। अत: वर्ष 1925 में विजय दशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना युगदृष्टा **डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार** द्वारा की गई। जब वे कलकत्ता में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे थे तो अनुशीलन समिति से उनका सम्पर्क हुआ था। उन्हें बाल गंगाधर तिलक की देश को स्वाधीन कराने के क्रांतिकारी विचारों ने प्रभावित किया वहीं गांधीजी के सत्य और अहिंसा से भी वे प्रेरित रहे किन्तु गांधी का मुस्लिमों के प्रति अत्यधिक झुकाव व तुष्टिकरण को वे शीघ्र ही समझ गये। उन्होंने हिन्दुओं में संगठन की कमी और उदासीन प्रवृत्ति को देखकर एकीकरण में लग गये। इसी उद्देश्य से उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को स्थापित किया तथा 'शाखा' का विचार रखा। इन शाखाओं में किसी निश्चित स्थान पर मिलना, प्रार्थना एवं व्यायाम करना प्रारम्भ किया गया। अखाड़े/व्यायामशालाएं मेलजोल का आधार बने। नागपुर में 5 स्वयंसेवकों से प्रारम्भ हुई शाखा का विस्तार धीरे-धीरे पूरे महाराष्ट्र और देश के कई भागों में हो गया तथा वर्ष 1940 तक हिन्दु जागरण एवं एकीकरण का अभियान का सफल संचालन हुआ। हिन्दु एकात्मकता की गहरी नींव उनके समय में ही पड़ गई थी।

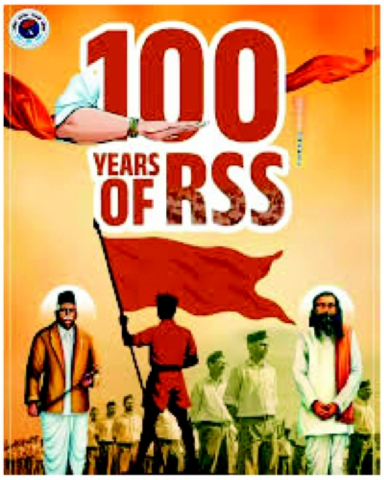

वर्ष 1940 में हेडगेवार के निधन के बाद अखण्ड भारत के स्वप्नदृष्टा **माधव सदाशिव गोलकुलकर 'गुरुजी'** सरसंघचालक बने तथा संघ की शाखाओं का प्रबल विस्तार हुआ, पूर्णकालीन प्रचारक व्यवस्था बनी सनातन गौरव की अवधारणा को सशक्त कर संघ को सुदृढ़ किया गया। इस समय भारत विभाजन हुआ जिसे आरएसएस ने स्वीकार नहीं किया।

संघ ने कश्मीर का भारत में विलय हो इसका प्रभावी प्रयास किया। जब गांधी जी की हत्या हुई तो वर्ष 1948 में संघ पर कांग्रेस सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया और दमन चक्र चलाया जो लगभग 1 वर्ष तक चला पर संघ व इसके सदस्य अग्निपथ पर डटे रहे। इनके कार्यकाल में ही विद्यार्थी परिषद, जनसंघ, भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिन्दु परिषद जैसे संगठन अस्तित्व में आये। वर्ष 1973 में इनका निधन हो गया।

इसके बाद तीसरे संघ सरचालक **बाला साहेब देवरस** बनाये गये। वर्ष 1973 में ही इंदिरा गांधी ने जनआक्रोश को कुचलने का प्रयास किया और 1975 में आपातकाल लगा दिया। उन्होंने संघ को भी प्रतिबंधित कर दिया। यद्यपि यह राजनैतिक संगठन नहीं था और सांस्कृतिक संगठन था। बाला साहब देवरस भी मीसा में बंदी बना लिए गये। साथ ही संघ के हजारों साथी भी। जब 1977 में आपातकाल हटा तो ये सभी जेल से बाहर आये। जनता पार्टी की वर्ष 1977 में सरकार बनी तो जनसंघ भी उसमें सहयोगी रहा। वर्ष 1980 में इन्होंने जनसंघ को भारतीय जनता पार्टी में परिवर्तित कर दिया। इन्हीं के समय रामजन्मभूमि आंदोलन हुआ। इन्होंने 'सेवा भारती' की स्थापना की।

भौतिकी के **प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैय्या'** को वर्ष 1994 में खराब स्वास्थ्य के चलते बाला साहब देवरस ने चौथे सरसंघ चालक का कार्यभार सौंपा। इन्हीं के समय केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी व पोखरण में परमाणु परीक्षण हुआ। इन्होंने विदेश में जाकर संघ का विस्तार किया। इनका निधन 14 जुलाई 2003 को हुआ।

के.सी. सुदर्शन पांचवे सरसंघ चालक बनाये गये, ये इंजीनियर थे। अपने कार्यकाल के दौरान ये स्वदेशी के कट्टर समर्थक तथा आर्थिक सम्प्रभुता के पक्षधर रहे। इन्होंने मिशनरी मतांतरण का विरोध किया। हिन्दुओं में खर्चीली शादियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरोधी रहे तथा कन्या भ्रूण हत्या पर मुखरता से अपनी बात रखी। सोशल इंजीनियरिंग के लिए उनका कार्यकाल 2003-09 याद किया जाता है।

छठे तथा वर्तमान सरसंघ चालक **मोहन भागवत** ने वर्ष 2009 में पदभार सम्भाला। इन्हीं के समय केन्द्र में वर्ष 2014 में भारतीय जनता पार्टी (एनडीए सरकार) सत्ता में आयी। कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति व रामंदिर पर सुप्रीमकोर्ट निर्णय तथा भव्य राममंदिर निर्माण हुआ। पाकिस्तान पर सरकार की स्ट्राइक तथा ऑपरेशन सिन्दूर हुआ। ये सफल ऑपरेशन नये भारत का प्राकट्य है। ये समरसता और समावेशी समाज के पक्षधर हैं। हिन्दुत्व की धार्मिक पहचान के स्थान पर सांस्कृति पहचान के रूप में देखते हैं। हर मस्जिद के नीचे मंदिर के मुद्दे का समर्थन नहीं करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 100वां वर्ष भी इन्हीं के कार्यकाल में मनाया जा रहा है।

समाज को एकजुट करने और राष्ट्र को मजबूत करने में यह शताब्दी यात्रा गौरवमयी रही। इसमें इन छ: सरसंघचालकों की महती भूमि को नमन!

आज संघ की देश में 85 हजार दैनिक शाखाएं, साप्ताहिक मण्डलियां और मासिक शाखाएं हैं। इनमें 50 लाख से अधिक स्वयंसेवक नियमित रूप से भाग लेते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, मारीशस आदि 40 देशों में संघ की शाखाएं संचालित होती हैं।

वर्ष 1977 में संघ ने विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण

संस्थान की स्थापना की तथा वर्ष 1989 में इसके लक्ष्य में विस्तार किया। आज 864 जिलों में 12118 विद्यालय संचालित हैं, जिनमें 1.50 लाख से अधिक शिक्षक कार्यरत हैं तथा 35 लाख से अधिक विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण के लिए संस्कार युक्त शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

संघ के 100वें वर्ष के उपलक्ष्य में यह विशेष डाकटिकट और 100 रुपये का सिक्का भी भारत सरकार ने जारी किया है। नीदरलैण्ड ने भी इस गौरवशाली अवसर पर विशेष डाक टिकिट जारी किया है। शताब्दी वर्ष का संकल्प है कि भारत न केवल आत्मनिर्भर बने बल्कि विश्व को भी शांति, सद्भाव और सहयोग की राह दिखाए। **– संकलन : कुमावत इंडिया पत्रिका टीम**

ढूंढ़िए वजह मुस्कुराने की-10

''मुस्कान वह वक्र रेखा है, जो हर सीधी होती समस्या को भी हल कर सकती है।''

जिंदगी एक ऐसा सफर है, जिसमें सुख-दुख, हँसी-आँसू और सफलता-असफलता सबका आना-जाना लगा रहता है। लेकिन इन सबके बीच जो चीज़ हमें आगे बढ़ने की ताक़त देती है, वह है **मुस्कान**। मुस्कुराना केवल एक भाव नहीं, बल्कि जीवन जीने का सकारात्मक तरीका है।

अक्सर हम अपने जीवन की व्यस्तता, परेशानियों और तनावों में इतना उलझ जाते हैं कि मुस्कुराना ही भूल जाते हैं। लेकिन सच तो यह है कि **मुस्कुराना कोई विकल्प नहीं, एक ज़रूरत है।** यह हमें हर कठिनाई से उबरने की हिम्मत देता है। जब आप मुस्कुराते हैं, तो आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है और आपके आसपास भी एक सुखद माहौल बनता है।

छोटी-छोटी खुशियों में ढूंढ़िए मुस्कान

हम यह भूल जाते हैं कि खुश रहने के लिए किसी बड़े कारण की ज़रूरत नहीं होती। सुबह की पहली किरण, बच्चे की हँसी, किसी अपने का प्यार, किसी दोस्त की बात — ये सब जीवन के ऐसे क्षण हैं जो मुस्कुराने की वजह बन सकते हैं।

''अगर आपके पास मुस्कुराने की एक भी वजह है, तो उसे थाम लीजिए, क्योंकि मुस्कान दिल से निकलती है और दिल को ही सुकून देती है।''

मुस्कुराहट केवल हमारे लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी एक तोहफा होती है। किसी दुखी चेहरे पर आपकी एक मुस्कान उम्मीद की किरण बन सकती है। किसी परेशान इंसान से अगर आप बस मुस्कुराकर बात कर लें, तो उसका दिन बन सकता है।

मुस्कानः सबसे आसान लेकिन सबसे शक्तिशाली साधन है।

''आपका चेहरा आपके दिल का आईना होता है, और मुस्कान उसका सबसे सुंदर श्रृंगार।''

कभी आपने महसूस किया है कि जब आप मुस्कुराते हैं तो आपके भीतर डर, घबराहट और तनाव कम हो जाता है? यह वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध है कि मुस्कुराने से हमारे मस्तिष्क में हैप्पी हार्मोन (डोपामिन, सेरोटोनिन) रिलीज़ होते हैं जो हमें मानसिक और शारीरिक रूप से अच्छा महसूस कराते हैं।

नजरिया बदलिए, जिंदगी बदल जाएगी

हर परिस्थिति में मुस्कान ढूंढ़ना आसान नहीं होता, लेकिन यह नामुमकिन भी नहीं है। बस अपना नजरिया थोड़ा सा सकारात्मक बनाइए। जब आप हर स्थिति में कुछ अच्छा देखने की कोशिश करेंगे, तो मुस्कुराने की वजहें खुद-ब-खुद मिलने लगेंगी।

''जिंदगी परफेक्ट नहीं होती, लेकिन हर दिन में कुछ न कुछ परफेक्ट जरूर होता है- उसी में छुपी है मुस्कान की वजह।''

निष्कर्ष : मुस्कराइए, क्योंकि आप जिंदा हैं। मुस्कराइए, क्योंकि आपने किसी को दर्द नहीं दिया। और मुस्कराइए, क्योंकि ये दुनिया आपकी मुस्कान से थोड़ी और खूबसूरत बनती है।

तो आइए, हर दिन, हर क्षण में ढूंढ़ें — **''वजह मुस्कुराने की।''**

-अमिता कुमावत

जीवन के रंग

बूढ़ी काकी कहती है- 'जीवन के रंग एक से नहीं होते। बहुत उतार-चढ़ाव होते हैं, बड़ी फिसलन होती है। मामूली कुछ नहीं होता।'

काकी से यह प्रश्न किया तो वह बोली- ''यह सच है कि हम पैदा हुए। यह भी सच है कि हम जिंदगी बिताने के लिए जीते हैं और यह भी सच है कि उम्र बीतती है तो बुढ़ापा आना ही है।''

मैं अपने प्रश्न का उत्तर शायद ही पूरा पा सकूँ क्योंकि सवाल और उत्तर उलझे हुए हैं। मैं पशोपेश में हूँ कि - पैदा, सिर्फ़ बूढ़ा होने के लिए ही होते हैं या पैदा मरने के लिए होते हैं।

बुढ़ापा सिर्फ उम्र का एक अंक नहीं, यह जीवन के अनुभवों का संग्रह है जो हमें एक अनोखा रंग देता है।

काकी थोड़ा हँसती है, कहती है- 'यह नियम है कि जो उत्पन्न हुआ है, वह समाप्त भी होगा। जैसे-जैसे वस्तुएँ पुरानी होती जाती हैं, वे क्षीण भी होने लगती हैं और यहीं से उनका अंतिम अध्याय शुरू होता है। कहानी हर किसी की शुरू होती है, मगर खत्म होने के लिए। हम उन्हीं वस्तुओं में से हैं जो उम्र के बढ़ने के साथ ही क्षीण हो रही हैं।'

'समय के बीतने के बाद किसी भी चीज़ की क़ीमत बदल जाती है। शुरूआत से अंत तक का सफ़र मज़ेदार ही रहता हो यह सही नहीं।'

रातों-रात गायब हुए 'कुलधरा' गांव के निवासी

सन् 1291 में वैष्णव धर्मावलम्बी पालीवाल ब्राह्मणों ने जैसलमेर से लगभग 18-20 किमी दूर कुलधरा गांव की स्थापना की थी। इसके आसपास भी लगभग 84 गांवों में पालीवाल ब्राह्मण रहने लगे थे। यह क्षेत्र शुष्क रेगिस्थान के बीच है किन्तु यहां भरपूर फसलें हुआ करती थी। लोग व्यापार भी करते थे। इस कारण यह गांव समृद्ध था।

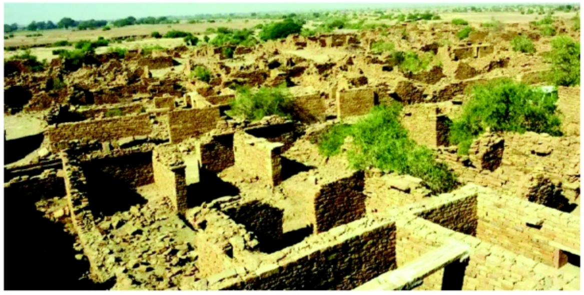

कहते हैं कि सन् 1825 में कुलधरा और आसपास के 84 गांवों के पालीवाल ब्राह्मण रातों रात अचानक गायब हो गये और यह गांव वीरान हो गया। यह भी बताया जाता है कि जाते-जाते उन्होंने श्राप दिया कि यहां कोई भी नहीं रह पाएगा। तभी से यह परित्यक्त गांव है और वीरान हो गया, इसे भूतहा गांव भी कहा जाता है तथा यहां रात को कोई रुकता नहीं है। आज इस गांव में लगभग 410 घर खण्डर हो चुके हैं और गांव के निचले इलाके में लगभग 200 घर और खण्डर हुए पड़े हैं। यहां कोई भी एक रात नहीं बिता पाया क्योंकि लोगों ने यहां 'पैरानार्मल एक्टीविटीज' (भूतियां गतिविधियां) महसूस की ओर वे चले गये। यहां भगवान विष्णु तथा महिषासुर मर्दनी का मंदिर है। आज राजस्थान पुरातत्व विभाग ने इसे संरक्षित घोषित किया हुआ है। आज हजारों पर्यटक कुलधरा देखने आते हैं। इसे स्वयं लेखक ने भी देखा है। यहां के खण्डहर लोगों को आकर्षित करते हैं। यह भी ज्ञात होता है कि यह गांव तब कितना समृद्ध रहा होगा। इस गांव को प्रात: 8:00 बजे से सायं 6 बजे तक देखा जा सकता है।

किवदंती है कि तब एक दुष्ट मंत्री सलीम सिंह था जिसे कुलधरा गांव के मुखिया की बेटी पसंद आ गई और उसने धमकी दी कि चाहे वह लड़की या उसका परिवार सहमत हो या नहीं वह उसी से शादी करेगा, अन्यथा गांव वालों को नतीजे भुगतने होंगे। इसके बाद गांव परिषद की मीटिंग हुई, जिन्होंने यह मांग मानने के बजाय अपने पुश्तेनी गांव व घर छोड़ने का निश्चय कर लिया तथा रातों-रात कुलधरा व आसपास के 84 गांव खाली हो गये और वैष्णव पालीवाल ब्राह्मण परिवार कहीं और चले गये। इसके अतिरिक्त यह भी माना जा सकता है पानी की कमी हो गई हो या भूकम्प से गांव नष्ट हो गया हो, सही कारण अज्ञात ही है। पर कुलधरा कभी समृद्ध गांव रहा था इसके पर्याप्त प्रमाण ये खण्डर आज भी दे रहे हैं। **– रमेश गेदर**

मांगलिक योग/दोष और विवाह सम्बन्ध

सामान्यतया हमारे देश में विवाह से पूर्व वर-वधु की जन्म कुण्डलियां मिलान करने की प्रथा प्रचलित रही है। जिसके अनुसार लडका व लडकी दोनों की कुण्डलियों से गुणों का मिलान किया जाता है, साथ ही मांगलिक योग का भी मिलान किया जाता है। यदि दोनों की कुण्डलियों के मिलान से सामान्यतया 18 अथवा अधिक गुणों का मिलान हो जाता है और कोई महादोष तथापि गण दोष, भकुट दोष अथवा नाडी दोष नहीं आता है तो दोनों की जन्मपत्रिकाएँ विवाह योग्य मानी जाती है तथा दोनों का वैवाहिक जीवन बिना बाधा सुखमय रहता है।

गुणों के मिलान के साथ मांगलिक मिलान अर्थात मांगलिक दोष को भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। दोनों की कुण्डलिया के मिलान में यदि किसी प्रकार मांगलिक दोष आता है तो सर्वप्रथम मांगलिक दोष का निवारण करके ही विवाह किया जाना चाहिये अन्यथा दामपत्य जीवन में कई बाधाओं/अभावों का सामना करना पड़ सकता है। मांगलिक दोष कुण्डलियों (जन्म पत्रिकाओं) में मंगल ग्रह की स्थिति से बनता है।

मंगल ग्रह प्राणी मात्र में रक्त का कारक, तमोगुणी, उष्ण (अग्नि तत्व प्रधान), उग्र एवं आक्रामक ग्रह है। जन्मपत्रिका में मंगल अपनी स्थिति तथा दृष्टि से जातक (व्यक्ति) के रक्त में उष्णता, उत्तेजना तथा उग्रता की वृद्धि करता है तथा जीवनसाथी के लिए अनिष्टकारी सिद्ध होता है।

विवाह के लिए जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में ग्रहों की स्थिति/प्रभाव का अध्ययन किया जाता है उससे ही मांगलिक दोष का कारण जाना जाता है।

जन्म कुण्डली में यदि मंगल ग्रह प्रथम भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो मांगलिक दोष होता है। क्योंकि इन सब स्थितियों में कुण्डली का सप्तम भाव मंगल ग्रह से प्रभावित होता है। यदि मंगल ग्रह कुण्डली में वक्रिय स्थिति में है तो मंगल का द्वितीय भाव, पंचम भाव, अष्टम भाव में होने पर भी मांगलिक दोष होता है। इसी प्रकार यदि प्लूटों ग्रह भी कुण्डली के प्रथम भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव अथवा द्वादश भाव में स्थित है तो मांगलिक दोष उत्पन्न करता है। प्लूटो की कुण्डली में वक्रिय स्थिति यदि द्वितीय भाव, पंचम भाव अथवा अष्टम भाव में है तो कुण्डली का सप्तम भाव मांगलिक दोष से प्रभावित होगा।

मांगलिक दोष के अतिरिक्त भी कुण्डली में अन्य कई दोष हो सकते है। जिसके कारण विवाह सम्बन्ध में विलम्ब होना, दाम्पत्य जीवन मे सुखों का अभाव होना हो सकता है जिसके लिए किसी अनुभवी ज्योतिषी से परामर्श/सलाह से दोषों का निवारण सम्भव हो सकता है।

-राधेश्याम जौहरी, जन्म पत्रिका विशेषज्ञ मो. 9829083001

'लता विद म्यूजिक मैस्ट्रोज' सम्पन्न

मोहन कुमार बालोदिया और रश्मि बालोदिया ने सजाई गीतों की सुरीली शाम

जयपुर। मैलोडीज विद रश्मि व मंजरी फाउन्डेशन की ओर से 28 सितम्बर को जेएलएन मार्ग स्थित महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम 'लता विद म्यूजिक मैस्ट्रोज' आयोजित किया गया। कार्यक्रम संयोजक राजस्थान की गायिका रश्मि बालोदिया ने बताया कि वो ये कार्यक्रम पिछले 10 वर्षों से भी अधिक समय से हर साल करती आ रही हैं। इस कार्यक्रम के जरिए वो लता मंगेशकर के फ़िल्म फेयर अवार्ड से लेकर भारत रत्न तक का सफर और विश्व पटल पर एक चमकता हुआ सूर्य लता मंगेशकर के शुरुआती जीवन से लेकर अंतिम क्षण तक के जीवन से जुड़ी खास बातों को गीतों के जरिए याद करती आ रही हैं। कार्यक्रम में रश्मि बालोदिया और जाने माने टी सीरिज गायक मोहन कुमार बालोदिया सहित शहर के कलाकारों ने लता मंगेशकर के गाए सुपरहिट एकल और युगल गीत पेश किए। जो श्रोताओं को बहुत भाये।

इन कलाकारों ने दी प्रस्तुति–

मोहन कुमार बालोदिया, रश्मि बालोदिया, सुरभि चन्दानी, विधि आचार्य, मनीषा जैन, के.के मीणा, यशा श्रीवास्तव, काशी कुमावत, विशाल शर्मा, रणवीर सिंह, अंशुमन शर्मा, समीर सेन, विपिन जैन , हरि ओम कायथ और सतीश राठौर ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन विनेहा पुरोहित ने किया।

मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने एवं खाने के चमत्कारी लाभ ई-बुक का विमोचन

श्री प्रहलाद राय जी टांक अध्यक्ष श्रीयादे माटी कला बोर्ड राजस्थान सरकार के कर कमलों द्वारा "मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने एवं खाने के चमत्कारी लाभ की एक सम्पूर्ण व्यवसायिक मार्गदर्शिका ई-बुक" का किया गया विमोचन।

बतौर लेखक – चिरँजी कुमावत (निर्माता निर्देशक) की इस साल ये 48वीं ई-बुक है। सफर लगातार जारी है, बहुत सी ई-बुक अभी पाइप लाईन में है। वर्षों से लेखन की लगातार की गई कड़ी मेहनत और साधना अब रंग लाने लगी है।

नीलम कुमावत को श्रेष्ठ गृहणि सम्मान

27 सितम्बर को चेम्बर ऑफ कामर्स, जयपुर में क्षितिज शक्ति संस्था ने गृहस्थ जीवन में योगदान के लिए श्रीमती नीलम कुमावत, झोटवाडा, जयपुर को 'श्रेष्ठ ग्रहणी' सम्मान से सम्मानित किया है। **बहुत-बहुत बधाई।**

रोमन कुमावत योग प्रशिक्षक सम्मानित

मदनगंज किशनगढ़ 12 अक्टूबर 2025 को हरिद्वार से योग प्रशिक्षण प्राप्त श्री रोमन कुमावत लौटकर के आए। उनका पतंजलि योग समिति, किशनगढ ने स्वागत किया। स्वागत में पतंजलि योग समिति, किशनगढ़ तहसील प्रभारी प्रभुदयाल कुमावत, भारत स्वाभिमान के युवा प्रभारी श्री राजकुमार मेघानी, सुबह के साथियों तथा सभी साधकों ने मिठाई खिलाकर स्वागत सम्मान किया।

श्री रोमन कुमावत को योग प्रशिक्षण लेकर लौटने पर **हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।**

योग शिक्षक विष्णु अनावडिया सम्मानित

किशनगढ़ में पिछले 18 सालों से नि:स्वार्थ योग सेवायें देने वाले पतंजलि योग शिक्षक श्री विष्णु अनावडिया को किशनगढ़ में दशहरा मेला कमेटी ने '**किशनगढ़ रत्न सम्मान**' से सम्मानित किया। यह सम्मान केंद्रीय राज्य कृषि कल्याण मंत्री श्री भागीरथ जी चौधरी के कर कमलों द्वारा दिया गया।

विष्णुजी दिखावे से दूर रहते हुए कम्युनिटी पार्क, मझेला रोड़, किशनगढ में अपनी सेवायें देते आ रहे हैं।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से श्री विष्णु अनावडिया को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

20 अक्टूबर को मनायी दिपावली

जीएसटी छूट, सजै बाजार, बम्बर खरीद ने बढ़ाया दीपोत्सव पर उत्साह

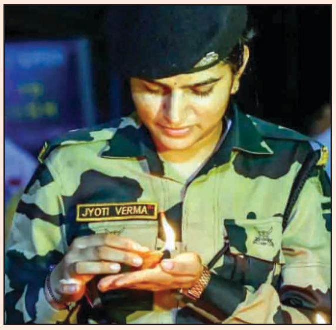

नवरात्र के पहले दिन 22 सितम्बर को जीएसटी में छूट के बाद से भारत के प्राय: सभी बाजारों में ग्राहकों की भीड़ उमड़ पड़ी। ग्राहकों ने बम्पर खरीद कर भारत की अर्थव्यवस्था में अप्रत्याशित वृद्धि कर दी। अमेरिकी 100% टैरिफ के बाद घरेलू खरीददारी ने बूस्टर डोज का काम किया। लोगों ने स्वदेशी और परम्परागत वस्तुओं की खरीददारी कर राष्ट्रहित को महत्व दिया। सरकार ने भी स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया था जिसका व्यापक असर देखने को मिला।

बाजारों में देर रात तक खरीददार देखे गये। इस समय दोपहिया-चौपहिया वाहन, रेडिमेड गारमेन्ट्स, साड़ियां, पटाखे, ड्राईफ्रूट्स, मिठाइयों, होम एप्लाइन्सेस, सोना-चांदी तथा सजावटी सामानों की जमकर खरीद हुई। इस बार जहां दुकानदार खुश है वहीं ग्राह भी मनपसंद सामान खरीद कर खुश दिख रहे हैं। इस बार दिल्ली (NCR) में पटाखों पर बेन नहीं था। वहीं उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी ने दंगे-फसाद करने वालों को कड़ी चेतावनी दी जिससे शांति का माहोल रहा। **19 अक्टूबर को सरयू तट पर अयोध्या में 26 लाख 70 हजार 215 दीपक प्रज्ज्वलित किये तथा 2128 अचर्कों ने एक साथ सरयू की आरती कर विश्व रिकार्ड बनाया।** इस अवसर पर अयोध्या आलौकिक लग रही थी। बाजारों में सामुहिक सजावट एवं रोशनी थी तथा इसे देखने भीड़ उमड़ पड़ी। राजस्थान के 544 मंदिरों में दीपावली पर्व मनाने के लिए 8 करोड़ से अधिक राशि की सरकार ने स्वीकृति दी जिनसे मंदिरों में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

हर साल की तरह हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 12वीं बार सैनिकों के मध्य थे, वे इस बार गोवा में INS Vikrant जहाज पर नौ-सैनिकों के साथ रहे व उन्हें अपने हाथों से दीपावली की मिठाई खिलाई। वहीं योगी आदित्यनाथ अयोध्या में नाविकों की मलीन बस्ती में जाकर मिठाई एवं फल वितरित किए।

भारत के बाहर विदेशों अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, दुबई, तहरीन, यूएअई आदि देशों से भी दीपावली मनाने के समाचार मिले हैं। दीपावली हमारी सांस्कृतिक पहचान है तथा किसी भी संस्कृति में प्रकाश तथा दीप प्रज्ज्वलन अच्छा माना जाता है, यह सब हमारी दीपावली में है। हमारी दीपावली 5 दिवसीय त्यौहार है जिसमें धनतेरस, रूप चौदस, दीपावली, अन्नकूट तथा भाई-दूज का अलग-अलग महत्व है। जो भारतीय गांव से शहर और सुदूरवर्तीशहर में अपनी नौकरी के कारण चले गये वो अपने गांव या मूल निवास पर दीपावली मनाने आते हैं और जब सब मिलते हैं तो खुशियां ही खुशियां हो जाती हैं, ऐसा ही माहौल इस दीपावली पर रहा। घर-घर अपनो के संग लक्ष्मी पूजन किया और दीपावली मनाई गई।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्हाइट हाउस में दीवाली समारोह में भाग लिया और इस अवसर पर भारत के लोगों और भारतीय-अमेरिकियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। ट्रंप ने कार्यक्रम में कहा कि मैं भारत के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

ओम प्रकाश कुमावत का असिस्टेंट प्रोफेसर में चयन

आरपीएससी द्वारा जारी कॉलेज असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा परिणाम घोषित यो हुआ जिसमें ऑल राजस्थान में 15वीं रैंक के साथ लोक प्रशासन विषय में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर आसींद क्षेत्र के साबदडा गांव के किसान परिवार के ओम प्रकाश कुमावत के पुत्र मुकेश कुमावत का चयन हुआ है। उल्लेखनीय है कि मुकेश कुमावत ने 2021 में स्कूल लेक्चरर परीक्षा में ऑल राजस्थान में तीसरा स्थान हासिल किया था।

कुमावत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह, 130 प्रतिभाएं पुरस्कृत

अजीतगढ़/शाहपुरा । खोजी पीठ त्रिवेणी महाराज की कृपा एवं संत राम विवाह एवं विकास समिति त्रिवेणी धाम धाम में कुमावत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें 130 प्रतिभाओं, 150 भामाशाह एवं अतिथियों का सम्मान किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए समिति अध्यक्ष सुभाष कोलूगरिया ने बताया कि समारोह में समाज के करीब 130 मेधावी छात्र-छात्राओं एवं अन्य प्रतिभाओं को स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रतिभा सम्मान समारोह मुख्य अतिथि फुलेरा के पूर्व विधायक निर्मल कुमावत ने कहा की समाज की प्रतिभाओं का हौसला बढ़ाने के लिए समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए एवं समाज का नाम रोशन करने वालों का सम्मान होना चाहिए। उन्होंने उपस्थित प्रतिभाओं से कहा कि वे मन लगाकर अध्ययन कर और भी ऊंचे अंक प्राप्त करें ताकि ऊंची सरकारी नौकरी मिल सके। इससे पूर्व अतिथियों ने भगवान गणेश की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्वलित करके विधिवत समारोह का उद्घाटन किया। वहीं आयोजन समिति द्वारा अतिथियों का माल्यार्पण करके स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता नारायण लाल दम्बीवाल ने की।

समारोह में विशिष्ट अतिथि सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर बंबोरिया, विमल कुमावत, सोहनलाल, कमलेश कुमावत एवं अभिषेक मारोठिया ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर दांतारामगढ़ के कमलेश राजस्थानी एवं लक्ष्मणगढ़ के निक्कू कुमावत ने समारोह स्थल पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस मौके पर समिति अध्यक्ष सुभाष कोलूकरिया, गंगाराम मारोठिया, समिति महामंत्री जगदीश जलेद्रा, गिरधारी लाल मारवाल, मातादीन मारोठिया समेत सैकड़ों की संख्या में समाज के लोग उपस्थित थे।

15.09.1946-26.08.2025

स्व. श्रीमती भंवरी देवी

धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरसिंह वर्मा (भदाणियाँ)

सहायक नगर नियोजक (सेवानिवृत्त) जयपुर

पुत्री स्व. श्रीमती कमला देवी एवं स्व. श्री लक्ष्मीनारायण जी खोरानिया

का स्वर्गवास 26 अगस्त, 2025 को हो जाने पर समाज बन्धुओं, सगे सम्बन्धियों, शुभचिन्तकों, मित्रगणों, सामाजिक एवं व्यापारिक संस्थाओं तथा विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने व्यक्तिगत उपस्थित होकर, संवेदना संदेशों, दूरभाष, वाट्सएप, मोबाईल आदि द्वारा इस दु:ख की घड़ी में हमें संबल दिया।

हम सभी परिवारजन आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

आप हमारी प्रेरणास्रोत व मार्गदर्शक बनकर सदैव हमारे हृदय में रहेंगी।

श्रद्धानवत्

राजसिंह-सुनीता, सज्जनसिंह-तारा (पुत्र-पुत्रवधु)

निखिल (इंजीनियर), अखिल (आर्किटेक्ट), नमन (पौत्र) एवं समस्त भदाणियाँ परिवार

फर्म :राजसिंह वर्मा-9414238799 स्वास्तिक डायमण्ड -9829611108 ड्रीम हाऊस मेकर्स- 9782649995

पता : 454, सुन्दर का बास, मिश्र राजाजी का रास्ता, जयपुर मो. : 9782996440

''बिहारी शरण पारीक राजस्थानी काव्य सम्मान'' कवि चंचल को

जयपुर काव्य साधक समूह का दो दिवसीय ''जकासा काव्य महोत्सव, 2025'' तीर्थ राज पुष्कर में 4 व 5 अक्टूबर को माननीय श्री जोगेश्वर गर्ग, मुख्य सचेतक, राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य संपन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवि श्री सुरेन्द्र चतुर्वेदी थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्याम सिंह राजपुरोहित सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी एवं साहित्यकार ने की।

इस अवसर पर श्री प्रहलाद कुमावत 'चंचल' जाहोता (जयपुर) को राजस्थानी काव्य लेखन के लिए प्रथम ''बिहारी शरण पारीक राजस्थानी काव्य सम्मान'' से सम्मानित किया गया।

श्री प्रहलाद कुमावत 'चंचल'

जाहोता (जयपुर), राजस्थानी भाषा के वर्तमान पीढ़ी के कवियों में चर्चित नाम है। दोहा, सोरठा, कुंडलियां, कवित्त, सवैया जैसे छंदां में रचित आपकी रचनाओं का शिल्प शिल्प बेजोड़ है।

कवि चंचल हिंदी एवं राजस्थानी में समान रूप से लेखन करते हैं किन्तु राजस्थानी में रचित आपके छंद, गीत, गजलों में लोक संस्कृति, गांव-गुवाड़, समाज, खेत-खलिहान, मजदूर तथा जीवन के संघर्षों की अभिव्यक्ति है, सामाजिक-राजनैतिक विसंगतियों पर आपके व्यंग्य मुक्तक तीखे प्रहार करते हैं।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की पत्रिका जागती जोत के साथ साथ राजस्थली, बिणजारो, हथाई, रूड़ो राजस्थान जैसी राजस्थानी पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में आपकी कविताएं/कहानियां प्रकाशित होती रहती हैं। आकाशवाणी जयपुर केंद्र से भी आपका काव्य पाठ प्रसारित हुआ है। आप अपने-आप में राजस्थानी (ढूंढाड़ी) के चलते-फिरते शब्दकोष हैं। लुप्त होती मातृभाषा को बचाने तथा उसे नयीं पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए आप द्वारा 2100 ढूंढाड़ी शब्दों के सरल हिंदी अर्थ के साथ चौपाई छंद में रचित एक पुस्तक '**आखर बेल**' शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है। मातृ भाषा को जीवित रखने का आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती हैं।

दादूराम सत्यराम

राशि कुमावत
पुत्री श्री अनन्त कुमार कुमावत (OSD CM)
को RAS परीक्षा-2023 में 6वीं रैंक पर चयनित होने पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छू
शारदा -रूप सिंह कुमावत (मौसी-मौसाजी), उर्मिला-उमेश चन्द कुमावत,
डॉ. देवांशी-इंजी. पवन जी कुमावत, गर्वित कुमावत, मिष्ठी कुमावत

रूपन आर्ट्स
ई-544, लाल कोठी योजना, जयपुर
मो. 931452407, 9314502964

वैवाहिक जीवन की पहली सीढ़ी — एडजस्टमेंट की कला

विवाह : नए जीवन में प्रवेश, नई खुशियां, नई भावनाएं, नया वातावरण, नए रिश्ते सब कुछ नया और खुशनुमा सा। शायद विवाह जीवन का वो पड़ाव है जहाँ से वर और वधू दोनों का ही नया जन्म होता है। एक तरफ दोनों को ही एक और माता-पिता मिलते हैं वही देवर, ननद और साले-साली के रूप में नए रिश्ते भी मिलते हैं। शादी के बाद पति-पत्नि के हृदय में प्रेम की कोपल नयी भावनाओं का जन्म भी होता है। कहने का अर्थ है कि चारों तरफ बस खुशी ही खुशी नजर आती है। सोचिए एक विवाह का संस्कार जीवन को कितना बदल देता है। प्रत्येक खुशी या आनन्द अपने साथ एक जिम्मेदारी भी लेकर आती है। जिम्मेदारी इस खुशी के प्रवाह को निरन्तर बनाए रखने की, जिम्मेदारी इस रिश्ते की खूबसूरती को ताउम्र यूँ ही सहेजने की साथ ही जिम्मेदारी पति अथवा पत्नि के साथ जुड़े सभी रिश्तों को आदर, सम्मान और प्यार देने की। हम कह सकते हैं कि

विवाह जीवन का वह पवित्र बंधन है जिसमें दो आत्माएँ, दो संस्कृतियाँ और दो परिवार एक साथ जीवनयात्रा शुरू करते हैं। यह केवल साथ रहने का वचन नहीं, बल्कि साथ निभाने की कला भी है। यही कला — एडजस्टमेंट की कला — वैवाहिक जीवन की पहली और सबसे आवश्यक सीढ़ी होती है।

''मंजिल मिले या ना मिले, यह तो मुकद्दर की बात है,
हम कोशिश ही न करें, यह तो गलत बात है।''
— हरिवंश राय बच्चन

यह पंक्ति हमें याद दिलाती है कि हर रिश्ते को निभाने में मेहनत और धैर्य उतना ही जरूरी है जितना प्रेम।

एडजस्टमेंट — समझौता नहीं, अपनापन है।

अक्सर लोग सोचते हैं कि एडजस्टमेंट का मतलब समझौता है, लेकिन असल में यह 'अपनाने' की भावना है। जब दो लोग विवाह के बंधन में बंधते हैं, तो वे अलग-अलग परिवेश से आते हैं। उनकी आदतें, विचार, खानपान, बोलने का तरीका सब अलग। ऐसे में अगर दोनों एक-दूसरे को अपनाने की कोशिश करें, तो रिश्ता सहजता से आगे बढ़ता है। इसके लिए आवश्यक है कि कुछ बातों का ध्यान रखा जाये जैसे:

संवाद और सहनशीलता — रिश्ते की रीढ़ : किसी भी रिश्ते में संवाद की कमी सबसे बड़ी दूरी बनाती है। अगर कोई बात मन में खटक रही हो, तो उसे बिना झगड़े के, शांत भाव से कहना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यदि साथी की कोई आदत आपको परेशान करती है, तो उसे उलाहने की तरह नहीं, बल्कि सुझाव के रूप में व्यक्त करें। यही सहनशीलता और संवाद का संतुलन रिश्ता मजबूत बनाता है।

''तुम अपना राग सुना दो मुझको, मैं अपनी तान सुना दूँ,
दो सुर मिल जाएँ जब अपने, जीवन गीत बना दूँ।''
— महादेवी वर्मा

परिवार और परंपरा का सम्मान : विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का संगम होता है। नए परिवार की परंपराओं को समझना और उनका आदर करना ही सामंजस्य की शुरुआत है।

यदि सास-ससुर किसी विशेष रीति को मानते हैं, तो उसे अपनाने का प्रयास घर में अपनापन बढ़ाता है।

स्पेस और सम्मान का संतुलन : एडजस्टमेंट का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति अपनी पहचान खो दे। एक सफल विवाह वही है जिसमें दोनों को अपनी रुचियों, मित्रों और निर्णयों के लिए सम्मान और स्वतंत्रता मिले।

पति क्रिकेट खेले, पत्नी संगीत सुने — दोनों के शौक एक-दूसरे के खिलाफ नहीं, बल्कि उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हैं।

जो बीत गई सो बात गई : इन पंक्तियों में बच्चन जी हमें सिखाते हैं कि अतीत की छोटी बातों को भूलकर आगे बढ़ना ही जीवन का सार है — और यही वैवाहिक एडजस्टमेंट का भी मूलमंत्र है। कई बार पुरानी बातों के बोझ को दोनों अपने से चिपकाए घूमते रहते हैं और गाहे-बगाहे उन बातों के ताने भी अपने जीवनसाथी को सुना ही देते हैं। ये गलत बात है इससे रिश्ता कमजोर होने लगता है। अच्छा तो ये है कि पुरानी बातों को त्याग कर, भूल कर आगे बढ़ जाना चाहिए।

प्रेम — हर एडजस्टमेंट की मूल भावना : जहाँ प्रेम और विश्वास गहरा हो, वहाँ कोई दीवार नहीं टिकती। एक-दूसरे पर भरोसा ही वह आधार है जिस पर हर एडजस्टमेंट खड़ा होता है।

''प्रेम केवल भाव नहीं, यह तो जीवन की साधना है,
जो इसे समझ ले, वही सच्चा जीवनसाथी कहलाता है।''

एक-दूसरे के लिए बदलना —

विवाह में कोई बड़ा त्याग नहीं माँगा जाता, बस छोटे-छोटे बदलावों से जीवन आसान हो जाता है।

अगर पत्नी सुबह जल्दी उठती है तो पति को कोशिश करनी चाहिए कि साथ दे;

अगर पति थका हुआ हो, तो पत्नी का मुस्कुराना ही सबसे बड़ा सहारा होता है।

''थोड़ा झुकना, थोड़ा समझना, थोड़ा रुकना, थोड़ा हँसना,
यही तो है संग जीने की रीति, यही है जीवन की सच्ची प्रीति।''

विवाह की डोर में एडजस्टमेंट वह सूत्र है जो रिश्ते को बिखरने नहीं देता। यह कोई एक दिन में सीखी जाने वाली कला नहीं, बल्कि धीरे-धीरे विकसित होने वाला अनुभव है।

जब पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, एक-दूसरे की गलतियों को माफ़ करते हैं, और एक-दूसरे के लिए खुद को थोड़ा-थोड़ा बदलते हैं — तभी यह यात्रा खूबसूरत बनती है।

''जीवन के सागर में प्रेम की नौका चलती रहे,
तूफ़ान भी आए तो मुस्कुराकर संभलती रहे।''

- **डॉ प्रिया मारवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर

तोड़े कुरूतियों को

विवाह दो लोगों के बीच सामाजिक एवं धार्मिक मान्यता प्राप्त मिलन है जो उन लोगों के बीच भी अधिकार एवं दायित्व प्रदान करता है जो इन दोनों लोगों से जुड़े होते हैं। आम प्रचलन में हम इसे शादी कहते हैं। विवाह मानव समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण प्रथा या समाजशास्त्रीय संस्था है समाज का निर्माण इसी से होता है और यह परिवार का मूल है।

समय के साथ इस प्रथा में निरंतर बदलाव आते रहे हैं इसी के अनुरूप इसकी कुछ बुराइयाँ अथवा सामाजिक कुरूतियां स्वत: ही समाप्त हो चुकी हैं यथा पर्दा प्रथा एवं बाल विवाह, क्योंकि बदलते वक्त के साथ बाल विवाह को लेकर बहुत सजगता हो गई है और कानून भी इसे रोकता है।

लेकिन इन सब के इतर जिन बुराइयों ने अपने पैर बुरी तरह विवाह की प्रथा में पसारे हैं वो हैं अत्यधिक खर्चीली और महंगी शादियां हैं जहां निरंतर देखा देखी और अवांछित होड़ में लोगों की कमर तोड़ दी जाती है। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति के लिए दिखावा और अत्यधिक हाई-फाई शादी उसके अहम को भले ही संतुष्ट कर दे लेकिन आम जन या मध्यम वर्ग इसमें पिसकर रह जाता है। खर्चीली शादी में खाने की बर्बादी बहुत ज्यादा होती है, प्राय: खाना झूठा छोड़ना लोगों की आदत भी होती है।

दहेज प्रथा को रोकने हेतु कड़े कानून भले ही हों लेकिन यह कुरीति समाज में अपनी जड़े जमा चुकी हैं। प्रत्येक वर्ग एवं जाति दान दहेज के मामले में बढ़-चढ़कर ही अपना काम करते हैं। एक प्रतिशत परिवार होते हैं जो बिना दान दहेज की शादी कर समाज में अपनी मिसाल कायम कर पाते हैं।

रोचक प्रथाएं तो विवाह जैसे संस्कारों में आनंद प्रदान करती हैं और मनोरंजक होती हैं किन्तु जिन्हें रुढ़ियां बना दिया जाता है वे कष्टदायक होती हैं। मृत्युभोज बंद कर दिया गया है उस में कपड़े (पहरावनी) आदि पर भी रोक लगाई गई है ठीक उसी प्रकार विवाह में भात प्रथा को भी एकदम सीमित किया जाना चाहिए। ये भी वधु पक्ष और वर पक्ष के ननिहाल के लिए भार स्वरूप बन जाती है।

जन्म पत्रिका मिलान के चलते कई बार अच्छे संबंध हाथ से निकल जाते हैं और रिश्ता करने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस बुराई पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए।

विवाह संबंध तय करते समय चार गौत्र मिलाए जाते हैं जो अक्सर रिश्ता तय करने में अत्यंत परेशानी का सबब बन जाते हैं अत: चार के स्थान पर दो गौत्र टाले जाएं तो रिश्ते बनने में सहूलियत रहेगी।

कुछ लोग विवाह के नाम पर अंधविश्वास और अवांछित परंपराओं का पालन करते हैं जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत होती है।

वैवाहिक संबंध करने से पहले उम्र भी देखनी चाहिए लड़का-लड़की में उम्र का फर्क ज्यादा नहीं होना चाहिए।

विवाह दो आत्माओं का मिलन कहा गया है जहां एक दूसरे के विचारों, भावनाओं को समझकर उन्हें सम्मानपूर्वक निभाना दोनों ही पक्षों के लिए आवश्यक है अच्छे वैवाहिक जीवन के लिए दिखावा, आडंम्बर और पूर्वाग्रह को छोड़कर समर्पण भाव से चलना ही विवाह को सफल बना सकता है जहां अहम को छोड़ा जाए और सामंजस को जोड़ा जाए तो विवाह निश्चित रूप से सफलता की गारंटी बन जाता है।

- भारती तोंदवाल

प्रस्तुत है वर्तमान में पनप रही सामाजिक विसंगति 'आटा-साटा' पर कटाक्ष करता प्रहलाद कुमावत 'चंचल' का एक चर्चित गीत -

आटो साटो

लम्पट नैं लाडी स्याणी रै,
क्यूं दीन्ही आटा साटा में।
सोना की धूळम धाणी रै,
कर दीन्ही गोबर गाटा में।।
मैं अे'मे बीएड नैट किलियर,
कर लीनी कद की।
बा'रीं में दो बर फेल बलम,
दस पर ही गाड़ी अटकी।
किंय्यां मैं अतरी खटकी रै,
पटकी ऊंडा अळझाटा में।। 1।।
सोना की धूळम धाणी रै....!

जामुन जेड़ो, रंग पक्येड़ो
बांको लगै जबाड़ो।
पिचक्या पिचक्या सा गाल लग्यो,
ज्यूं गेहुं चणा कै जाड़ो।
नं डटै कमर पर नाड़ो रै,
माड़ो छै बिल्कुल रा'ठा में।। 2।।
सोना की धूळम धाणी रै....!

दो राखै मोबायल दीदा,
दिन भर घणां खपावै।
यो अेडिट फेडिट फेक चैट,
अणतोली ही सरकावै।
री-चारज कम पड़ जावै रै,
डेली दो जीबी डाटा में।। 3।।
सोना की धूळम धाणी रै....!

धक्का खावै, फैल रचावै,
धेलो नहीं कमावै।
नित ऊठ निकरमों नौ बां'गा,
बापू ढ़ाबा में खावै।
दिन आंथ्या घूंट लगावै रै,
गुड़ जाय भींटका भाटा में।। 4।।
सोना की धूळम धाणी रै....... .!

भरी जवानी साठ बरस का,
डोकरड़ा ज्यूं खासै।
गुटखा सूं गळग्या दांत आंत,
सेड़ो होंठा नैं चासै।
दो हाथ परा स्यूं बासै रै,
बदबू ज्यूं बूस्या खाटा में।। 5।।
सोना की धूळम धाणी रै......!

क्यूं लीरां लीर टूल फाटी कै,
पछै लाल लगा दी।
आ हीर कणी अपणै हाथां,
रेतां कै माय रळा दी।
करकर में खांड मिला दी रै,
धक जाय लूण तो आटा में।। 6।।
सोना की धूळम धाणी रै..........!

ज्यै कर दे मायत गैल बैल ज्यूं,
अणबोली चल जावै।
छानैं छानैं चींचाय चिड़कली,
आंसूड़ा ढ़ळकावै।
'चंचल' हिरणी कुरळावै रै,
जुड़ दी जबरन झाटा में।। 7।।
सोना की धूळम धाणी रै...........!

-प्रहलाद कुमावत 'चंचल'

विवाह का बदलता स्वरूप

विवाह एक सामाजिक व्यवस्था है। यह सबसे पवित्र व महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक संस्कार माना जाता है। समाज में विवाह दो व्यक्तियों (स्त्री व पुरुष) को साथ रहने की नैतिक अनुमति प्रदान करता है। यदि हमारी सभ्यता में वैवाहिक बंधन नही हो तो समाज की कल्पना पशुवत हो जाऐगी। जंगल दर्शन से लेकर एक स्वस्थ व सभ्य समाज के संघर्षो, परिवर्तनों व आविष्कारों में विवाह का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। लगभग सभी धर्मों में विवाह को अत्यन्त ही पवित्र तथा पारम्परिक रीति रिवाजों के साथ एक पावन वातावरण में सम्पन्न किया जाता है। बात चाहे हिन्दू धर्म की हो या इस्लाम की या फिर सिक्ख या अन्य किसी धर्म की, सभी में विवाह संस्कार की एक निर्धारित रीति या कार्यशैली होती है। हमारे धर्म में माना जाता है कि विवाह संस्कार में वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच समस्त 36 कोटि देवी-देवता वर-वधु को आशीर्वाद देने स्वयं उपस्थित होते है। आज समाज में सर्वत्र भौतिकवादी वातावरण का वर्चस्व होने के कारण तथा लोगों की व्यवसायिक मानसिकता के चलते विवाह उत्सवों में दिखाने का माहौल हावी होने लगा है। एक समय था जब विवाह में समय अर्थात मूहूर्त को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता था। आज फालतु के छिछोरेपन तथा बेहूदे खेल-तमाशों के चक्कर में अनावश्यक समय तथा पैसे की बर्बादी तो होती ही है साथ ही आवश्यक पाठ-पूजा, मंत्रोच्चारण तथा मूहूर्त जैसी आवश्यक रीतियों की अवहेलना भी की जाती है। पहले तोरण का मूहूर्त, फेरे का मूहूर्त, विदाई का मूर्ति आदि पंडितों द्वारा निकाला जाता था तथा सभी कार्य उसी के अनुसार सम्पन्न होते थे मगर आज विवाह में मूहुर्त की कहीं कोई अनिवार्यता नजर नहीं आती। सब कार्य अपनी सुविधानुसार होते है। इसके अतिरिक्त आज भोजन, दहेज तथा साज सज्जा के रूप में अनापशनाप खर्च किया जाता है, जो पैसे की बर्बादी है। इन कुरीतियों से व्यक्ति कर्ज में डूब जाता है जिसे चुकाने में ही उसका बाकी जीवन व्यतीत हो जाता है। कई बार तो आर्थिक दबाव बढ़ने के कारण बहुत से लोग दुख तथा निराशा से व्यथित होकर बीमार तक पड जाते है। क्या विवाहों में इतना दिखाना जरूरी है? इन पर रोकथाम के लिए समाज में कड़े नियम बनाने चाहिए। इसी प्रकार से आतिशबाजी, प्री वेडिंग शूट, एन्ट्री इवेन्ट, स्टॉल, गिफ्ट, आर्केस्टा, फोटो शूट, फीमेल सर्विंग व वेलकम स्टॉफ इत्यादि सिर्फ दिखाने के लिऐ किये जाते हैं जिनकी कोई आवश्यकता नहीं होती।

इन सब पर भी रोकथाम जरूरी है। विवाह में परोसे जाने वाले पकवानों पर भी नियंत्रण होना चाहिए। निश्चित मात्रा में ही आइटम बनाए जाने चाहिए। इन्ही चीजों की वजह से समाज में अव्यवस्था फैल रही है। इतना मंहगा विवाह करना पड़ेगा, इसी डर की वजह से आज कई युवा लिव-इन में रहने लगे है या कोर्ट मैरिज या आर्य समाज में विवाह करने लगे है। समाज की व्यवस्था ही बिगड़ बाएँ या शान दिखाने के चक्कर में हम संस्कारों से ही हाथ धो बैठे उससे पहले चेत जाना बहुत जरूरी है। कई बार पर्याप्त पैसा नहीं होने के कारण माता-पिता नैतिकता का साथ नहीं दे पाते व बच्चों को स्व्यं ही लिव-इन रिलेशन में रहने की इजाजत दे देते है। इसकी जिम्मेदार किसी ना किसी रूप में आज की खर्चीली विवाह पद्धति है। अब बहुत ही आवश्यक हो गया है कि हम सादगी की ओर कदम बढ़ाएँ, विवाह पर होने वाले अपव्यय को रोकने के लिए आवाज उठायें तथा सीमित संसाधनों में एक खूबसूरत संस्कार को सादगी से आयोजित करें।

- उर्वशी बालोदिया

हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955

भारत की स्वतंत्रता के बाद भारत की संसद ने हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955 पारित किया, जो हिन्दुओं के विवाह से सम्बन्धित विधि को संहिताबद्ध करने के लिए लाया गया। इस अधिनियम का विस्तार सम्पूर्ण भारत पर तथा अधिवासित उन हिन्दुओं पर भी है जो इस राज्य क्षेत्र के बारह हों।

यह अधिनियम हिन्दु धर्म में वीरशैव, लिंगायत अथा ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज या आर्य समाज के अनुयायियों पर भी लागू है। यह अधिनियम जैन, बौद्ध या सिक्ख पर भी लागू होता है। अधिनियम के अनुसार विवाह के समय दोनों पक्षकारों में से न तो वर की पत्नी और वधु का पति जीवित नहीं होना चाहिए। वर या वधु चित्र विकृति के कारण विधिमान्य सहमति देने में असमर्थ न हों, वे संतानोत्पत्ति के योग्य हो, उन्हें उन्मुक्ता का दौरा बार-बार न पड़ता हो, वर की आयु 21 तथा वधु की आयु 18 वर्ष हो, ऐसी कोई रूढ़ि या प्रथा से उनके बीच विवाह अनुज्ञात न हो, वे प्रतिबद्ध नातेदारी डिग्रियों के भीतर न हो तथा वे एक-दूसरे के सपिण्ड न हो। हिन्दु विवाह वर-वधु संयुक्त रूप से सप्तपदी अर्थात अग्नि के समक्ष फेरे पूर्ण होने पर ही मान्य होता है।

हिन्दु विवाह में बदलते प्रतिमान

आज के समय में हम यदि ध्यानपूर्वक देखें तथा विचार करें तो पायेंगे कि आजकल जो हिन्दु विवाह हो रहे हैं उनके प्रतिमानों में बहुत ज्यादा परिवर्तन हो गये हैं। इनके मुख्य कारण है वैश्वीकरण, औद्योगिकीरण, शहरीकरण तथा आधुनिकीकरण। लोग पहले गांव एवं ढाणियों में रहते थे या फिर शहरों में जो छोटे थे। ये शहर आज महानगर हो गये हैं। पहले अधिकांश लोग कृषि से जुड़े थे या मजदूरी करते थे। इस कारण वे आसपास रहते थे, यदि कोई दूर भी रहता हो तो उन्हें छुट्टियां पर्याप्त मिलती थी। अब जानते हैं क्या-क्या बदलाव आ गये हैं—

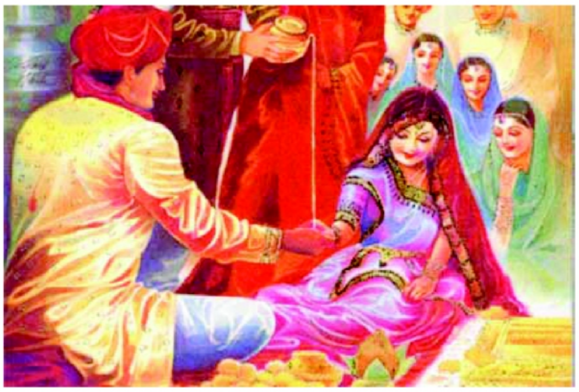

- पहले विवाह को एक पवित्र बंधन माना जाता था तथा दम्पत्ति जन्म-जन्मातर तक पति-पत्नी रहेंगे यह अवधारणा होती थी।
  जबकि आज विवाह में अनुकूलता और उपयोगिता पक्ष को महत्व दिया जाने लगा है। यदि अपेक्षा के विपरीत स्थिति विवाहोपरांत पायी जाये तो विवाह विच्छेद की नौबत आ जाती है।
- पहले के जमाने में पुरोहित एवं नाई भी रिश्तों का पता कर रिश्ते करवा देते थे। फिर दौर आया परिजन एवं रिश्तेदार परिवार एवं लड़का/लड़की देखकर रिश्ते तय कर देते थे। कई बार तो लड़का-लड़की आपस में देखते ही नहीं थे।
  आज के दौर में लड़के/लड़की स्वयं देखभाल करके तथा एक दो बार मीटिंग करने के बाद ही रिश्ते की हां करते हैं। परिजन तो उनकी हाँ में हां मिलाकर संतोष कर लेते हैं।
- पहले जाति, गोत्र और वर्ग का मिलान करने के बाद लड़का/लड़की के गुण-दोष एवं जन्मपत्री का मिलान करके ही रिश्ते करते थे।
  आजकल आर्थिक क्षमता, उपयोगिता, भरोसेमंदता, समान स्वभाव, रूपरंग तथा परिवार का आकार देखकर विवाह तय होने लगे हैं।
- पहले जन्मपत्री और गुणदोष का मिलान विवाह की प्राथमिक अनिवार्यता थी।
  आजकल इन्हें नकारा जा रहा है तथा विवाह साइट्स जैसे शादी डॉट कॉम, जीवनसाथी डॉट कॉम तथा वैवाहिक रिश्तों के व्हाट्सएप ग्रुप विवाह के रिश्ते ढूंढने का आधार हो गया है।
- पहले रिश्ते परिवारों के समान सामाजिक स्तर को देखकर किये जाते थे। इनका स्थान आज समान आय एवं समान व्यवसाय स्तर ने ले लिया है।
- पहले वैवाहिक कार्यक्रम धार्मिक विधि से मंत्रोचार के साथ मुहुर्त पर सम्पन्न किये जाते थे तथा परिवार एवं निकट रिश्तेदार सभी रस्मों में उपस्थित रहते थे।
  आजकल शादी में आधुनिकता तथा वैभव का प्रदर्शन ज्यादा होने लगा है। शादियां बड़ी-बड़ी इवेन्ट कम्पनियां कराने लगी हैं। चाहे जलसा हो या खाना भिन्न-भिन्न वैरायटी के पकवानों का होना लाजमी हो गया है।
- पहले विवाह की रश्मे घर, धर्मशाला या मंदिर में सम्पन्न हुआ करती थी।
  आजकल प्री-वेडिंग शूट, डेस्टिनेशन वेडिंग और विदेशी डेस्टीनेशन में शादियां होने लगी हैं। हर फंक्शन में अलग थीम की सजावट, ड्रेस कोड एवं पकवान बनने लगे हैं इन पर लाखों रुपये खर्च करके प्रसन्न हो रहे हैं।
- पहले ऐसा कोई बिरले ही होता था जिसका विवाह नहीं हुआ हो। ऐसे व्यक्ति को उसके रिश्तेदार भी घर बुलानापसंद नहीं करते थे।
  आजकल जो कन्सेप्ट आया है उसमें लड़के-लड़कियां शादी ही नहीं करना चाह रहे। वे 'लिव इन रिलेशन' में रहना चाहने लगे हैं। दूसरा कन्सेप्ट समलैंगिक विवाह का आ गया है। ये दोनों हमारे सभ्य समाज के लिए चुनौती है। इनसे सावधान रहें कि हमारे बच्चे इनकी ओर भूल से भी कदम नहीं बढ़ा पाये

निष्कर्ष : हिन्दु विवाह एक पवित्र संस्कार है। इसमें अपने परिवारजनों की उपस्थिति में उनके आशीर्वाद के साथ देवी-देवताओं के आशीर्वाद से दो आत्माएं एक हो मिलती हैं। उन्हें साथ-साथ रहने के लिए समस्त समाज एवं कानून से भी संरक्षण मिलता है।

इसलिए हमारी संस्कृति और पारिरिक परम्पराओं के साथ विवाह कर सुखमय जीवन व्यतीत करें। अनावश्यक एवं अवांछित बदलाव को नकारें। नहीं तो विवाह पवित्र बंधन के बजाए एक समझौता होगा इससे जीवन में वास्तविक खुशी नहीं मिल पायेगी।

हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यों के संरक्षण में ही सभी का हित है। कभी-कभी समाचार मिलते हैं कि विदेशी तथा अन्य धर्म के मानने वाले हिन्दु रीति रिवाज से भारत आ कर शादी करते हैं, तो सुखद अनुभूति होती है।

-रमेश गैदर

शरणागत की रक्षा करना निन्दित नहीं माना जाता

सन्त कबीरदास जी एक बार अपनी कुटिया में परिवार के साथ सो रहे थे। रात को एक आदमी ने उनकी कुटिया का दरवाजा खटखटाया। कबीरदास जी ने दरवाजा खोल दिया। आने वाला अपने आप ही बोल उठा कि मैं चोर हूँ। पुलिस मेरा पीछा कर रही है, वह मुझको मार डालेगी। आप मेरी रक्षा कीजिए। अब कबीर साहब क्या करते? उनके घर में अधिक जगह नहीं थी। फिर भी उन्होंने कह दिया कि ''यह मेरी लड़की सो रही है, तुम चुपचाप इसके साथ सो जाओ, बोलना मत, फिर जो करना होगा, मैं कर लूंगा।''

इतने में पुलिस आ गई। उसने भी कबीर साहब की कुटिया का दरवाजा खटखटाया। कबीर साहब ने दरवाजा खोल दिया। पुलिसवालों ने पूछा कि आपके घर में कौन-कौन है? एक चोर इधर ही आया है। वह छिपा है क्या?

कबीर साहब बोले कि देख लो, मेरा घर तुम्हारे सामने है। पुलिस वाले घर देखने लगे तो स्त्री-पुरुष एक साथ सोते दिखाई पड़े। पुलिस वालों ने पूछा कि यह पुरुष कौन है? कबीर साहब ने जवाब दिया कि मेरा जमाई है। यह सुनकर पुलिसवाले चोर को छोड़कर चले गये।

अब यदि कोई कहे कि किस प्रकार झूठ बोलकर दोषी की रक्षा करना तो बहुत बुरा है। ऐसा करने से संसार की व्यवस्था बिगड़ जायेगी।

लेकिन, श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में भगवान श्रीरामचन्द्र जी कहते हैं कि सत्पुरुषों में शरणागत की रक्षा करना निन्दित नहीं माना जाता। शरणागत कैसा ही क्यों न हो, उसकी रक्षा करना निन्दनीय नहीं है। दूसरे लोग भले ही निन्दा करें, लेकिन उस निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए। क्योंकि सत्पुरुष जानते हैं कि आज तक परमात्मा ने, सद्वस्तु, चिद्वस्तु, आनन्द वस्तु ने, अद्वैत वस्तु ने किसी को छोड़ा नहीं है।

श्रीरामचरितमानस के सुन्दर काण्ड में, रावण के भाई विभीषण जब श्रीरामजी की शरण में आये, तो उन्होंने यहां तक कह दिया कि जो मनुष्य अपने अहित का अनुमान करके शरण में आये हुए का त्याग कर देते हैं, वे क्षुद्र हैं, पापमय हैं, उन्हें देखने में भी हानि है। (पाप लगता है)।

- प्रो. बालकृष्ण कुमावत

भगवान् श्रीरामचन्द्र - सर्वमान्य आदर्श

सम्पूर्ण भारतीय समाजके लिये समान आदर्श के रूप में भगवान् रामचन्द्र को उत्तर से लेकर दक्षिण तक सब लोगों ने स्वीकार किया है। उत्तर में गुरु गोविन्द सिंह जी ने रामकथा लिखी है, पूर्व की ओर 'कृत्तिवास रामायण', महाराष्ट्र में 'भावार्थ रामायण' चलती है। हिंदी में गोस्वामीजी की रामायण

'श्रीरामचरितमानस' सर्वत्र प्रसिद्ध है ही। सुदूर दक्षिण में महाकवि कम्बन द्वारा लिखित 'कम्बरामायण' अत्यन्त भक्तिपूर्ण सरस ग्रन्थ है। मनुष्य के जीवन में आने वाले सभी सम्बन्धों को पूर्ण एवं उत्तम रूप से निभाने की शिक्षा देने वाला प्रभु रामचन्द्र के चरित्र के समान दूसरा कोई चरित्र नहीं है। उनका पराक्रम समग्र भारत की एकता का प्रत्यक्ष चित्र है। आदि कवि ने उनके सम्बन्ध में कहा है कि वे गाम्भीर्य में समुद्र के समान और धैर्य में हिमाचल के समान हैं- **'समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव।'** इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करके मानो उन्होंने हम सबके सामने वह बात रखी कि **'आसेतु हिमाचल'** भारत के लिये प्रभु श्रीराम ही आदर्श हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक भिन्न-भिन्न भाषाओं के सभी महाकवियों ने इस आदर्श को स्वीकार करके तथा उस महापुरुष के चरित्र का गान करके हम लोगों को धर्म के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया है। -माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर से साभार

काम का दबाव और भागदौड़ भरा जीवन है बनाम अंतरात्मा की शांति

लंदन में एक बेहद खास और विचारोत्तेजक बातचीत देखने को मिली, जब गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई और इस्कॉन के भिक्षु गौरांग दास आमने-सामने आए. जहां एक ओर पिचाई दुनिया की सबसे प्रभावशाली टेक कंपनियों में से एक का नेतृत्व कर रहे हैं, वहीं गौरांग दास ने जीवन को एक अलग मोड़ देते हुए अध्यात्म और स्थायी जीवनशैली को अपनाया है। यह सिर्फ दो पूर्व IIT ग्रेजुएट्स की मुलाकात नहीं थी, बल्कि यह दो अलग सोच और जीवन की दिशा का प्रतीक थी-एक डिजिटल तरक्की की राह पर, दूसरा आंतरिक शांति की ओर।

जब मंच पर सुंदर पिचाई ने गौरांग दास की युवा दिखने वाली छवि की तारीफ की, तो गौरांग दास ने मुस्कराते हुए कहा, **''सुंदर पिचाई गूगल से डील करते हैं, जो तनाव देता है, और मैं भगवान से डील करता हूं, जो तनाव दूर करते हैं।''** यह एक साधारण-सी बात थी लेकिन उसका असर गहरा था। इसने दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि आज के दौर में जहां काम का दबाव, तकनीकी जुड़ाव और भागदौड़ से भरा जीवन है, वहां अंतरात्मा की शांति कितनी ज़रूरी है।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर

विशिष्ट संरक्षक

वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅंडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

20 सितम्बर श्री जोधाराम सिरसवा (मण्डा भीमसिंह वाले), शक्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
21 सितम्बर श्री जगदीश प्रसाद कुमावत पुत्र श्री भागीरथमल नेमीवाल, विद्याधर नगर, जयपुर
21 सितम्बर श्री दिलीप कुमार सिरोया पुत्र श्री अशोक सिरोया, पैच तलाई, निम्बाहेडा
22 सितम्बर श्रीमती गोपाली देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामपाल कारगवाल, जनकपुरी-2, सांगानेर, जयपुर
23 सितम्बर श्री जगदीश प्रसाद नेमीवाल, विद्याधर नगर, जयपुर
24 सितम्बर श्री पंकज वर्मा पुत्र स्व. श्री चन्द्रकान्त खडगटा, खडगटा भवन, मोतीडूंगरी, जयपुर
24 सितम्बर श्रीमती राजा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचन्द मियाणिया, भगवान नगर-द्वितीय, टोडी, नींदड
26 सितम्बर श्रीमती मधु धर्मपत्नी श्री दिनेश बबेरीवाल, खिरणी फाटक, झोटवाडा, जयपुर
27 सितम्बर श्रीमती रंजना धर्मपत्नी श्री हितेश खोवाल, खिरणी फाटक, झोटवाडा, जयपुर
27 सितम्बर श्रीमती धापू बाई बातरा, नीमच माता, उदयपुर
29 सितम्बर श्रीमती रंजना कुमावत, शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा

2 अक्टूबर श्रीमती रामप्यारी देवी सिरस्वा,दांता
4 अक्टूबर श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी श्री बिरधी चन्द धुधारिया, चान्दपोल अनाजमण्डी, जयपुर
6 अक्टूबर श्रीमती कमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री नारायणलाल देवतवाल, रघुनाथपुरी, सांगानेर, जयपुर
7 अक्टूबर श्रीमती मंजू देवी धर्मपत्नी श्री बाछू लाल अजमेरा, बाजणी तलाई, सांगानेर, जयपुर
7 अक्टूबर श्री पप्पू लाल धुंधारिया, ढाणी मोला की, टोडी स्टेण्ड, सीकर रोड, जयपुर
10 अक्टूबर श्रीमती संतोष देवी भोड्या, निवारू रोड, जयपुर
11 अक्टूबर श्री सत्यनारायण खण्डारिया, लालकोठी स्कीम, जयपुर
11 अक्टूबर डॉ. बी.एल. कुमावत किरोड़ीवाल, जोबनेर
11 अक्टूबर श्रीमती ममता देवी बारावाल, चौमूं
13 अक्टूबर श्री बद्रीनारायण कुमावत दौराया, जयपुर
15 अक्टूबर श्री भीम सिंह वर्मा (गुडीवाल), गोवर्धन मथुरा
16 अक्टूबर अनिशा कुमावत सोकिल, इन्द्रा कॉलोनी, चोमूं
17 अक्टूबर श्रीमती वरजू बाई खन्नारिया, उदयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
अक्षय	B.Tech.	Indina Army(Tech. Officer)	15.11.2000	6'0''	ब्याड़वाल	नरेड़ा	मारोठिया	बालोदिया	7066016371	जयपुर
देवेश	B.A.	Pvt. Job.	5.7.99	5'5''	बबेरीवाल	अजमेरा	बालोदिया	बढ़ानिया	8003629166	जयपुर
राहुल	B.Com., CA	Manager SBI (Life)	7.9.98	5'8''	जाखरा	चोरासिया	सिलवाड़िया	दौराया	9462779139	प्रतापगढ़
ड्रोन	MBA, BCA	(MNC)	10.7.96	5'9''	भोड़या	माचीवाल	लोरवाड़िया	घोड़ेला	9829366605	जयपुर
प्रशान्त	M.Com.	Pvt. Job.	7.4.2001	5'10''	मरावंडिया	खोरानिया	तांगड़ा	गैदर	7976220877	जयपुर
कार्तिक	B. Tech. (Civil)	Project Manager	20.10.97	5'7''	किरोड़ीवाल	मारवाल	कुसुम्बीवाल	मालिया	9460016654	जयपुर
योगेश	M.Com.	Owns Agency	30.6.97	5'7''	देवतवाल	मामोड़िया	बालोदिया	अनावड़िया	8058801772	जयपुर
तुषार	M.Com.	Accountant	9.2.99	5'11''	ब्याड़वाल	खोवाल	बेरा	मारोठिया	9314653546	जयपुर
विशाल	D. Pharma	Medical Store	26.1.2001	6'0''	मारोठिया	राहोरिया	मारवाल	कारगवाल	9982593738	जयपुर
विमल	MCA	Pvt.	28 वर्ष	5'7''	आसीवाल	मारवाल	सिगनवाल	काम्या	9667755599	चौमूं
हर्षित	MBA (IIM)	Account Manager	30.11.96	6'1''	मोरवाल	अडानिया	कटूम्बरा	कारगवाल	9414306725	अलवर
रघुवीर	M.Com.	Manager	12.5.96	5'6''	जेठीवाल	झुझुनोदिया	सिंघाठिया	किरोड़ीवाल	9829688180	जयपुर
गोविन्द	M.Com.	Toll Collector	29.5.97	-	सिंघीवाल	किरोड़ीवाल	कुण्डलवाल	कारगवाल	9166590610	ब्यावर
मनोहर	M.Sc.(Chem)	Leacturer	5.7.92	5'3''	मारवाल	जेठीवाल	मारोठिया	सीहोर	9785658014	जयपुर
आदित्य(मांगलिक)	B.Com. CA.	MNC	25.7.99	5'8''	लाइचा	घोड़ेला	अनावड़िया	मतेडावारा	8290493857	प्रतापगढ़
जितेश	M.A., B.Ed., BSTC	Pvt. Service	7.6.95	6'0''	भोरोदिया	खाटवाल	कुकड़वाल	मारवाल	8432754471	जयपुर
चन्द्रशेखर	B.A., ITI	Accountant	8.5.95	5'10''	भोरोदिया	चौरासिया	कुकड़वाल	नरानिया	9950314887	जयपुर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
शारदा	-	Govt. Nursing officer	1992	-	कुंडलवाल	दम्बीवाल	होदकास्या	बडबून्दी	9001956606	जयपुर
डॉ.श्वेता	BAMS, MD	Assi. Profesor	जून 91	5'4''	मलेठिया	टांक	सिंघमार	खटवालिया	8556861717	अबोहर
प्रियंका	M.Com.	Prepard for compition	17.1.97	5'3''	तूंदवाल	जलान्दरा	घोड़ेला	होदकास्या	9829082137	सीकर
मान्सी	M.Com.	Private Job	6.11.96	5'8''	भोरोदिया	बालोदिया	मोदोलिया	नरालिया	8224003453	जयपुर
हीरल	B.Com., MBA.	Pvt. Ltd.	10.2.98	5'7''	मारवाल	कैकट्या	मामोडिया	सिंघनवाल	9829777017	जयपुर
निमिषा	M.A.	--	14.9.2000	5'3''	ब्याड़वाल	मारोठिया	होदकास्या	छापोला	9714371504	जयपुर
तनु	B.Sc., B.Ed.	--	10.9.2002	5'3''	देवतवाल	छापोला	किरोड़ीवाल	सिरोहिया	9314340595	जयपुर
करिश्मा	B.Com. (Fashion)	Skin specialist	31.10.96	5'3''	खोवाल	बेडवाल	घोड़ेला	जलान्दरा	9414181560	कोटा
रविना	M.Com. RSCIT	--	12.1.97	5'3''	मारवाल	अनावडिया	भडानिया	राहोरिया	9887231651	जयपुर
अमृता(मांगलिक)	B.A.	Graphic Designer	8.9.2002	5'0''	दम्बीवाल	राजोरा	खोवाल	बासनीवाल	9414337505	जयपुर
माही(मांगलिक)	M.Sc., Gate & Net	--	23.1.2000	5'1''	दम्बीवाल	राजोरा	खोवाल	बासनीवाल	9414337505	जयपुर
गरिमा	M.Com.	Teaching	1.11.95	5'7''	खोवाल	बबेरीवाल	कारगवाल	बालोदिया	8769332951	जयपुर
दीपिका	MA	--	नवम्बर 1994	5'4''	बालोदिया	घोड़ेला	सिहोटा	गोठवाल	9461162745	जयपुर
वापिका	M.CA	Pvt. Ltd.	28.6.92	5'0''	मारवाल	जलान्दरा	जेठीवाल	बोडिया	9351708090	जयपुर
दिव्या	B.Tech.	Pvt. Ltd.	29.6.91	5'3''	भौरोदिया	छाबल्या	खूंखवाल	खटवाल	8947992776	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुन: भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना 'कुमावत इंडिया' पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mailÑkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/40 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया,मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

OM PUBLIC SR. SEC. SCHOOL

AN ENGLISH MEDIUM CO-EDU. SCHOOL

51 Shiv Nagar, Heerapura Dhawas, Jaipur M.: 9214 517451, 7793094057, 8384 966 966

PG TO XII | ARTS | COMMERCE | SCIENCE

विद्यालय द्वारा टॉपर विद्यार्थियों को कम्प्यूटर देकर सम्मानित करते हुए

प्रधानाध्यापिका
रोहिणी बड़ीवाल

संचालक
ओमप्रकाश बड़ीवाल

संचालक
रितेश बड़ीवाल

संचालक
महेश बड़ीवाल

निदेशक
कैलाश बड़ीवाल

OM KIDS ACADEMY SCHOOL

Admission Open

PLAY GROUP TO X An English Medium *co-educational School*

164-166, Ekta Nagar, S-Block, Near Vidhansabha Nagar,
Dhawas, Ajmer Road- Jaipur M. 995099-1122, 902465-4556

Salient Features:-

- Affordable Fees Structure.
- Well trained teachers.
- Highly secured school.
- Open-air classrooms.
- Multimedia resource centre.
- Spacious indoor and outdoor play area.
- Appropriate child teacher ratio.
- Regular excursions & Picnics.

HEAD BRANCH OM PUBLIC SR. SEC. SCHOOL

(Hindi & English Medium)

51, Shiv Nagar, Heerapura, Ajmer road, Jaipur. M. 9214517451

रजि. सं. 2005/175

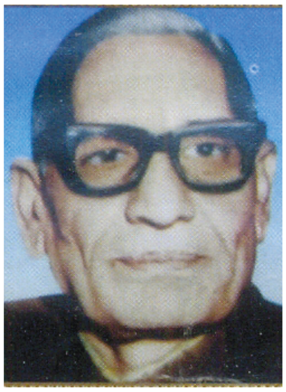

मास्टर भौंरीलाल वर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट

30, नवल निकुंज, पंचवटी जेडीए कॉलोनी, गुर्जर की थड़ी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

चिरस्मरणीय समाज सेवी, बहुमुखी, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं कुमावत समाज के अग्र पुरूष स्व. श्री भौंरीलाल वर्मा (मास्टरजी) की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए उनकी 111वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 33वां मास्टर भौंरीलाल वर्मा स्मृति व्याख्यान एवं प्रतिभा सम्मान समारोह 14 सितम्बर, 2025 को आयोजित किया गया। समारोह में 19 मेधावी विद्यार्थियों को 90 प्रतिशत अथवा अधिक अंक प्राप्त करने पर प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया।

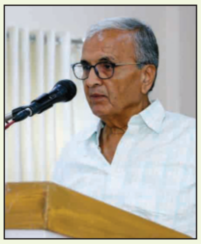

ट्रस्ट की प्रमुख गतिविधियां

(1) प्रतिवर्ष छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करना।

(2) आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को अग्रिम अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति प्रदान करना।

(3) श्रीमती लक्ष्मी स्मृति पुस्तकालय के माध्यम से छात्र-छात्राओं को पुस्तकीय सहायता करना।

(4) स्व. मास्टर जी की जयन्ती 14 सितम्बर को स्मृति व्याख्यान आयोजित करना एवं समारोह की विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान करना एवं छात्रवृत्ति वितरण करना।

(5) समाज सेवा एवं शैक्षणिक उन्नयन हेतु अन्य कार्यक्रमों का आयोजन।

किशोर कुमार देवतवाल
संरक्षक
मो.: 7877095052

रामजीलाल तोंदवाल
अध्यक्ष
मो.: 9828130256

रामचन्द्र वर्मा
उपाध्यक्ष
मो.: 9672750188

धीरज वर्मा
कोषाध्यक्ष
मो.: 9929442200

रविकान्त वर्मा
मंत्री
मो.: 9983314170

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com
Website : www.sandalwood.cn.com

RAS परीक्षा-2023 में चयनित होने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

राशि कुमावत
6वीं रैंक

कुलदीप कुमावत एवं रविन्द्र कुमावत
11वीं रैंक 541वीं रैंक

पवन टांक कुमावत

संगीता कुमावत
103वीं रैंक

शिवराज कुमावत
92वीं रैंक

पलक कुमावत

शुभेच्छू

सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.)

कार्यालय-पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction

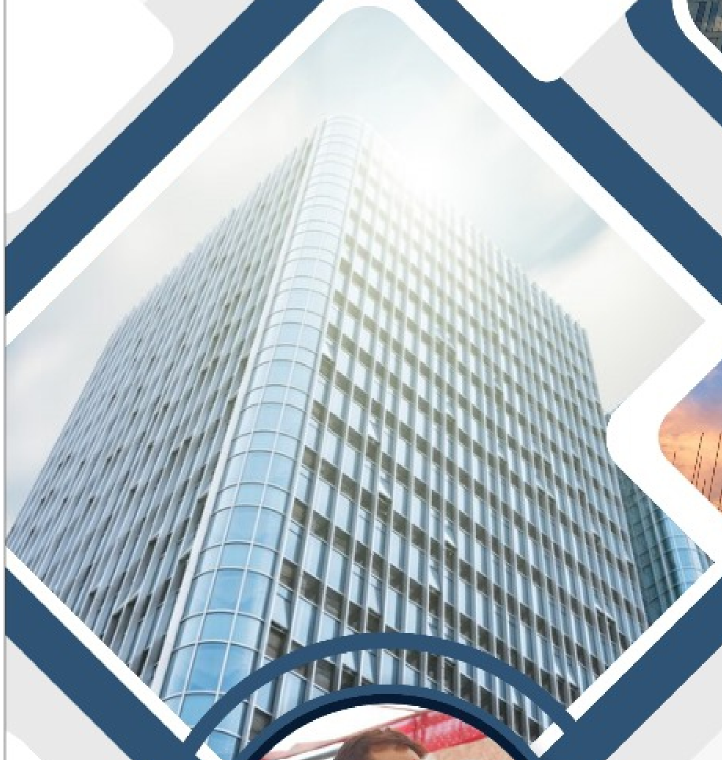

SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in

ADMISSION
OPEN

Vijay Anand
International Academy

Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri,
Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve the Best Education

CCTV
SURVEILLANCE
24X7

Director
Deendayal Kumawat

Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)

Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018